किशोर उपन्यास माला क्रम—२

बाजीराव पेशवा

उमा शंकर

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

प्रकाशक ● उमेश प्रकाशन,
५, नाथ मार्केट नई सडक, दिल्ली-६

मुद्रक ● राष्ट्रभारती प्रेस,
कूचा चेलान, दिल्ली

संस्करण ● दिसम्बर, १९६१
(प्रथम संस्करण)

मूल्य ● दो रुपये

दो शब्द

शिवाजी के शासन मे अलग-अलग विभाग के अलग-अलग मन्त्री हुआ करते थे। इन्ही मन्त्रियों मे जो प्रधान मन्त्री हुआ करता था वह 'पेशवा' के नाम से जाना जाता था। पेशवा फारसी का शब्द है, जिसका मतलब है अगुआ।

पेशवा बालाजी विश्वनाथ के पुत्र बाजीराव प्रथम थे। पिता की मृत्यु के उपरान्त बाजीराव, पेशवा घोषित हुए थे। २८ अप्रैल सन् १७४० ई० को ४२ वर्ष की अल्प आयु में उनकी मृत्यु हो गई थी। उनकी मृत्यु जिस प्रकार हुई थी उसका पूरा विवरण इस उपन्यास में है।

बाजीराव पेशवा के विषय में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार 'सर रिचर्ड टेम्पल' ने इन शब्दों में लिखा है—"बाजीराव जीवनपर्यन्त यही कार्य करता रहा कि मराठों का अधिकार भारतीय महाद्वीप पर अरबसागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैल जाए। वह मराठों के बीच योद्धा पेशवा के नाम से स्मरण किया जाता है और उसे हिन्दू शक्ति का अवतार मानते हैं।"

इस उपन्यास मे उपन्यास जैसी रोचकता तो है ही, साथ ही अधिक से अधिक इतिहास की पुस्तकों को छान-बीनकर सच्ची कथा दी गई है, जिससे किशोरों को इतिहास का भी उत्तम ज्ञान हो सके। यही उनके लिए आवश्यक है।

आशा है मेरा परिश्रम सफल होगा और देश के खिलते हुए फूल आदर्शों और कर्तव्यों का पालन करते हुए स्वयं और समाज को उन्नति की ओर बढ़ाते जायेंगे।

खास बाज़ार, उमा शंकर
कानपुर

१

तब के पूना नगर और आज के पूना नगर में आकाश-पाताल का अन्तर है। यह कथा मै उस समय की बतला रहा हूँ जब मूढ़ा नदी और मूढ़ा नदी से घिरा हुआ पूना नगर अधिक सुन्दर दिखता था। थोड़े-से घरों में थोड़े-से लोग रहा करते थे, जिनका थोड़ा-सा व्यापार था। लोग प्रसन्न थे और भरे-पूरे थे।

इसी पूना में मस्तानी नाम की एक मुसलमान लड़की रहा करती थी। उसकी आयु लगभग सत्तरह-अट्ठारह वर्ष की थी। वह बड़ी रूपवान थी और बहादुर भी थी। उसकी बहादुरी की चर्चा दूर-दूर गाँवों मे हुआ करती थी। वह भाला और तलवार चलाने में अनोखी थी। घुड़सवारी में अभी तक उसे कोई मात नही दे सका था। जब कभी पूना निवासी आखेट प्रतियोगिता करते, तो मस्तानी भी मर्दाना लिबास पहनकर प्रतियोगिता में भाग लेती और जंगली भालू या दूसरे भयंकर पशुओ का शिकार करके बड़ों-बड़ों को अचम्भे में डाल देती थी।

यद्यपि मस्तानी में इतने गुण थे परन्तु दुर्भाग्य यह था कि वह एक वेश्या की लड़की थी और पेट पालने के लिए उसे नाचने-गाने का काम भी करना पड़ता था। उसके पिता नही थे। माँ थी जो

बहुत बुड्ढी थी। वेश्या होते हुये भी मस्तानी का चरित्र पवित्र और निर्मल था। कभी किसी को उसके विरुद्ध कोई उल्टी-सीधी बात सुनने को नहीं मिली थी और यही कारण था कि समाज मे उसकी प्रतिष्ठा थी। पूना के रहने वाले उसे इज्जत की निगाह से देखते थे और वैसा ही उसके साथ व्यवहार भी करते थे।

जाड़े की धूप ढल चली थी। मस्तानी की वृद्धा माँ रेहल के सामने झुकी हुई कुरान पढ़ रही थी। पैरों की आहट सुनकर उसने सिर

उठाकर देखा। सामने से अहमद चला आ रहा था। अहमद के लिए मस्तानी के घर मे कोई रोक टोक नहीं थी। अहमद पूना के एक बड़े व्यापारी का लड़का था और मस्तानी से विवाह करना चाहता था। मस्तानी की माँ अहमद की इच्छा को समझती थी और मन-ही-मन चाहती थी कि किसी प्रकार मस्तानी का विवाह उससे हो जाय। वह नही चाहती थी कि मस्तानी जीवन भर नाचने-गाने वाली बनी रहे। अहमद ने समीप आकर बड़े अदब से सलाम किया।

मस्तानी की माँ ने आशीर्वाद दिया—"अल्लाह की मेहरबानी तुम पर हमेशा बनी रहे बेटा। आज क्या बात है? बड़े प्रसन्न दिखलाई पड़ रहे हो?"

अहमद ने कहा—"आप को नही मालूम अम्मी! कल मैने चीता का शिकार किया था। जान पड़ता है मस्तानी ने आपको बतलाया नही? यही चीज तो लड़कियो मे बुरी है। अपने से अच्छा किसी को नही देखना चाहती है। मै ·····।"

तब तक मस्तानी कमरे से निकलती हुई सामने आ खड़ी हुई और मुँह बनाकर बोली—"जी हाँ, जी हाँ। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। अम्मी जरा इनसे यह तो पूछो कि पहला भाला किसने मारा था?"

अहमद—"भाला मारने से क्या होता है जी। चीता के वार को रोकने वाला तो मै ही था। अम्मी! लड़ाई मैने लड़ी थी। तलवार उसके मुँह मे मैने डाली थी।"

मस्तानी हँसकर बोली—"ओहो! एक में इतना घमंड है। कही दो चार मारे होते तब तो सरकार के पैर जमीन पर पड़ते ही नही। खुद गजे को ।"

मस्तानी की माँ बीच मे बोल पडी और डाँटते हुए कहा—"दोनों भागो तो यहाँ से। जब देखो तब लडाई। पता नही तुम दोनों का जन्म किस दिन हुआ था। तू भी मस्तानी बडी शैतान है। अहमद आता है तुझसे बाते करने के लिए और तू उससे लड़ने लगती है। चलो, उठो दोनो यहाँ से।"

दोनो उठकर चले गए। मस्तानी की माँ पुन: कुरान पढने लगी।

मकान के पीछे एक छोटा-सा सहन था जिसमे सब्जी बोई हुई थी। इधर-उधर कुछ फूलो के पौधे भी थे। दीवार के किनारे-किनारे अमरूद के कई पेड़ भी थे। दोनो एक अमरूद के पेड़ के नीचे आकर बैठ गए। अहमद बोला—"आज तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। पूछूँ?"

मस्तानी—"पूछो।"

अहमद—"मैं बहुत दिनो से मस्तानी तुमसे कहना चाहता था परन्तु सकोचवश कह नही पा रहा था। मै तुमसे प्रेम करता हूँ मस्तानी! और तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूँ। क्या मुझसे तुम विवाह करने के लिए तैयार हो?"

मस्तानी ने सिर झुका लिया और धीरे-से बोली—"अभी और सोच लो अहमद! विवाह खिलवाड़ नही है। फिर एक वेश्या के साथ विवाह करने के लिए बहुत साहस और सच्चे प्रेम की आवश्यकता है। अभी तुम अपने हृदय को और टटोलो। ऐसा न हो कि विवाह करने के कुछ दिनों बाद तुम मुझे छोड़कर कही और चल दो। पुरुषों का कोई ठिकाना नही है।"

अहमद—"मै तुम्हारी बातो से इन्कार नही करता लेकिन मुझ

पर तुम्हें ऐसा सन्देह नही करना चाहिए। मुझे तुम बहुत दिनों से समझती चली आ रही हो।"

मस्तानी—"सो तो ठीक है पर बड़ो का कहना है कि जल्दी का काम शैतान का होता है। अभी तुम्हें और सोचने की ज़रूरत है। उठो! शाम हो रही है। अभी और काम भी देखना है।" वह खड़ी हो गई।

अहमद भी खड़ा हो गया और पुन आने को कहकर चला गया।

२

औरगजेब अपने पिता शाहजहाँ को बन्दी बनाने और दारा शिकोह ऐसे योग्य भाई का वध कराने के उपरान्त दिल्ली के सिहासन पर बैठा था। वह बड़ा अत्याचारी था और हिन्दू धर्म का विरोधी था। सम्राट् बनते ही वह जबर्दस्ती हिन्दुओं को मुसलमान बनाने लगा था। मन्दिरो को तुड़वाकर उनके स्थान पर मस्जिदो का निर्माण कराने लगा था। जो विरोध करते थे वे हाथी के पैरों के नीचे दबवा दिए जाते थे। इस प्रकार उसके जुल्म से सारा हिन्दुस्तान कराह उठा था। चारो ओर हाहाकार मचने लगा था।

ऐसे ही समय छत्रपति शिवाजी ने मराठो की एक सेना तैयार की थी और औरंगजेब का विरोध करने लगे थे। लड़ाइयाँ होने लगी थी। शिवाजी की वीरता और मराठों की एकता ने कमाल कर दिखाया था। महाराष्ट्र से औरगजेब की सत्ता मिटने लगी थी। जब-जब मुगल सेना सामने आई तब-तब उसे मुँह की खानी पड़ी। औरंगजेब की सारी हेकड़ी भूल गई। शिवाजी की जयजयकार होने लगी परन्तु दुर्भाग्य को क्या कहा जाय ? अचानक शिवाजी की मृत्यु हो गई। बनता हुआ काम बिगड़ गया।

औरंगजेब की पुन बन आई थी। उसने महाराष्ट्र को बुरी

तरह रौद डाला था। रायगढ़ पर उसका अधिकार हो गया और शिवाजी के पुत्र शम्भूजी बन्दी बनाये गए। उन्हें नगा कर उनके सारे बदन पर कालिख पोती गई। फिर औरंगजेब ने तुलापुर की प्रत्येक गली और सड़क पर इन्हें घुमवाया। उसके बाद वह दरबार मे लाये गए। औरगजेब हँसता हुआ बोला—"यह है शिवा का लड़का शम्भू! हिन्दू धर्म को बचाने वाला। जरा सब लोग इसकी सूरत देखे!" वह पुन: ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

शम्भूजी भी बडे जोर से हँस पड़े और गरजते हुए बोले—"और यह है शाहजहाँ का लडका औरगजेब! मुसलमान धर्म का बचाने वाला जिसने अपने बाप और भाईयों को……।"

बीच ही में औरगजेब चिल्ला उठा—"काट लो इसका सिर।"

शम्भूजी का सिर धड से अलग कर दिया गया।

औरंगजेब का अत्याचार इसी प्रकार चलता रहा परन्तु इस ससार में कोई अमर होकर तो आया नही है। एक न एक दिन सबकी मृत्यु होती है। २० फरवरी सन् १७०७ ई० को औरंगजेब का देहान्त हो गया। कराहती हुई भारत की धरती ने ईश्वर को बार-बार धन्यवाद दिया। मराठो मे पुनः चेतना आई। साहस बढा। शम्भूजी के लड़के शाहू ने पुन. मराठो को एकत्रित किया और सेना बनाकर महाराष्ट्र से मुगलों को खदेडने लगे। पुन स्वराज्य की स्थापना हुई। मराठा राज्य बना और इस राज्य की राजधानी सतारा बनी। धीरे-धीरे राज्य बढने लगा। मुगल भागने लगे।

शाहू के प्रथम प्रधान मन्त्री बालाजी विश्वनाथ जो पेशवा बालाजी विश्वनाथ के नाम से पुकारे जाते थे, बडे योग्य और बहादुर व्यक्ति थे। उन्होंने जिस साहस और परिश्रम से मराठा राज्य की

नींव को मजबूत बनाया था, वह उस समय अनहोनी को होनी करना था परन्तु दुर्भाग्यवश उनकी भी असमय मृत्यु हो गई। तब शाहू ने उनके बाईस वर्षीय पुत्र बाजीराव को पेशवा घोषित किया। शाहू को बाजीराव के अन्दर उनके पिता के सारे गुण दिखलाई पड रहे थे और शाहू को भरोसा था कि यह युवक प्रधान मन्त्री के भार को भली-भाँति संभाल सकेगा।

शाहू का भरोसा सही निकला। साल-दो साल के भीतर ही बाजीराव ने अपनी वीरता और साहस का ऐसा परिचय दिया कि अत्याचारी मुगल थर्रा उठे। दिल्ली सम्राट् मुहम्मद शाह रगीला की उलझन बढ गई। बाजीराव की ख्याति फैल गई। वह सौ वर्ष तक जीविन रहें, यही सब ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। चारो ओर उनकी वीरता का आतक छा गया। अत्याचारियों से देश मुक्त हो जाएगा, ऐसी आशा दिखलाई पड़ने लगी। मराठा राज्य उन्नति की ओर बढने लगा।

पूना मे खबर फैली कि पेशवा बाजीराव मालवा से लौट रहे है और दो दिन पूना मे रुककर तब सतारा को प्रस्थान करेंगे। पूना निवासी बड़े प्रसन्न थे। पेशवा के रूप मे बाजीराव को देखने का यह उनका पहला अवसर था। इसलिए पेशवा के स्वागत-सत्कार के लिए उन्होने बड़ी धूमधाम से तैयारी आरम्भ कर दी। नगर झंडियो और पताकाओ से चमक उठा।

बाजीराव सेना सहित पूना आ पहुँचे। उन्हें देखने के लिए नगर उमड़ पड़ा। मस्तानी भी भीड़ में खड़ी उचक-उचककर देख रही थी। पेशवा मुख्य सड़को से होते हुए पड़ाव पर जा पहुँचे। सध्या समय लोगों ने नज़रे भेट की। बाजीराव बड़ी रात गये तक

सबसे बातें करते रहे। नगर निवासी बाजीराव के स्वभाव और उनके आकर्षक चेहरे-मुहरे से बड़े प्रभावित थे। घर-घर मे उनकी प्रशंसा हो रही थी।

बाजीराव को शिकार खेलने का बड़ा शौक था। जब भी उनको अवकाश मिलता था, वह सब कुछ भूलकर शिकार खेलने मे अपने को भूल जाते थे और अधिकतर ललकार-ललकारकर भयकर पशुओं का आखेट करते थे। उन्होंने दूसरे ही दिन नगर के शिकारियों को निमन्त्रित किया और शिकार को निकल पड़े। सब अपने-अपने घोडे पर सवार जगल की ओर हवा की भाँति उड़ चले। जब जंगल की सघनता बढ़ने लगी तो पेशवा ने सब को रोकते हुए कहा—"सब अपने घोड़ों को यही बाँध दे और अलग-अलग शिकार को जाएँ। देखना है कौन क्या क्या लाता है ? जाईये !"

एक शिकारी ने सिर नवाकर पूछा—"अंत में सब लोग यहीं इकट्ठे होगे न महाराज ?"

पेशवा ने सिर हिलाकर हाँ कर दिया।

सब अलग-अलग जंगल में फैल गए। पेशवा भी एक ओर को चल पड़े।

कुछ दूर जगल में आगे जाने पर बाजीराव को गुर्राहट सुनाई दी और कुछ दूरी पर बाँयी ओर की झाड़ी से एक चीता निकलकर आगे को बढा। बाजीराव ने झट से तलवार म्यान से खींच ली और चीता को ललकारा। चीता ठिठका, उसने घूरा, फिर अपने दोनों पंजों से मिट्टी करौंदता हुआ बड़े-बड़े दाँतों को निकालकर गुर्राया। बाजीराव भी सतर्क थे। उन्होंने पुनः ललकारा। चीता ने भयंकर गर्जना के साथ छलाँग मारी। शिकार में निपुण बाजीराव

चीते का वार बचा गये और मुडकर अपना वार करने ही वाले थे कि पीछे से एक भनभनाता हुआ भाला चीता के पेट में आकर धँस गया। चीता लड़खड़ाया और जिधर से भाला आया था उधर मुड़ता हुआ उस पर झपट पड़ा। भाला मारने वाला पहले से तैयार था। उसने अपनी तलवार उसके मुँह मे डाल दी। चीता का काम तमाम हो गया। वह लड़खड़ाकर पृथ्वी पर गिर पडा।

बाजीराव ने समीप पहुंचकर उस युवक की पीठ ठोंकी—"शाबाश बहादुर। इतनी कम उम्र में ऐसा भयंकर आखेट ? धन्य है तुम्हारे माता-पिता ! पूना के ही रहने वाले हो ?"

"जी श्रीमन्त।" कहकर युवक अपने हाथ को देखने लगा। कई स्थानों पर दाँत लग जाने के कारण हाथ लहूलुहान हो रहा था। पर किसी कारणवश वह अपना साफा खोलकर हाथ पर लपेटना नही चाहता था। वह सोच मे पड गया। तब तक पेशवा ने अपना साफा खोलकर फाड डाला और उसका हाथ पोंछने लगे। हाथ पोंछने के उपरान्त पेशवा ने पट्टी बाँधते हुए पूछा—"पर युवक, तुम्हारे हाथ तो बिल्कुल स्त्रियों जैसे है। इन हाथों से भी ऐसे शिकार कर लेते हो ? आश्चर्य है।"

युवक कुछ झेंपा परन्तु इस भय से कि कही उसका भेद न खुल जाए उसने अपने को संभाला और मजाक के रूप में कहा—"तब तो श्रीमन्त को हमें और शाबाशी देनी चाहिए। स्त्रियों जैसे हाथ पाकर भी ऐसा काम करना अधिक महत्व की बात है न ?"

बाजीराव—"बिल्कुल युवक, बिल्कुल। तुम्हारी वीरता की जितनी बड़ाई की जाए वह थोड़ी है। मैं तो चाहूँगा कि तुम्हारे जैसे युवक मेरी सेना में आकर देश और धर्म की रक्षा करने में मुझे सहयोग दें।

तुम जैसे बहादुरो की आज देश को आवश्यकता है। बोलो, तैयार हो ?"

युवक बड़ी उलझन में पड गया। क्या कहे, क्या न कहे। पेशवा की बात का नाही करना भी उचित नहीं था और साथ ही अपना भेद भी खोला नही जा सकता था। उसकी परेशानी बढ गई।

तब तक पेशवा बोल उठे—"सोच लो युवक! अभी जल्दी नहीं है। अपने माता-पिता से सलाह कर लो। जाओ। मैं इधर से जाऊँगा।" वह दूसरी ओर मुड़ गये।

जब तक बाजीराव दिखलाई पड़ते रहे युवक वहीं खड़े-खड़े उन्हे देखता रहा। उसकी आँखों से ओझल होने पर वह मुड़ा और कुछ सोचता हुआ पूना की ओर चल पड़ा।

यह मर्दाने पोशाक मे मस्तानी ही थी जिसने अपनी वीरता और साहस का परिचय देकर बाजीराव को आश्चर्य में डाल दिया था। मस्तानी ने घर पहुँचते ही अपनी माँ से एक-एक बात विस्तार के साथ बतलाई।

बुढिया की गर्दन तन गई। उसे आज अपनी पुत्री पर महान् गर्व था।

३

दूसरे दिन अहमद को देखते ही मस्तानी चिल्ला पडी—"खूब आए। तुम्हारे यहाँ किसी को भेजने ही वाली थी। इधर हफ्तों कहाँ गायब रहे ? क्या नाराज़ हो गये हो ? कल का हाल तो तुम्हें मालूम न होगा ? होते तो देखते कि मस्तानी के आखेट में और तुम्हारे आखेट में कितना अन्तर है ? पेशवा साहब के वार के पहले मैंने वार करके चीता का काम तमाम कर दिया था।" मस्तानी सब कुछ एक साथ कह डालना चाहती थी।

अहमद ने पूछा—"कौन ? बाजीराव पेशवा ? तुम्हारी कहाँ भेट हो गई ?"

मस्तानी—"बस समझ लो, होनी थी इसलिए हो गई और ऐसी हुई कि वह दाँतों तले अँगुली दबाकर रह गए।" फिर मस्तानी ने सारी घटना सुना दी।

अहमद—"बाजीराव तो देखकर दग रह गये होगे ? एक लड़की इस तरह ...।"

मस्तानी बीच में बोल पड़ी—"तब तो शायद अधिक दंग रह जाते अहमद, लेकिन मैं तो मर्दाने वेश में थी। फिर भी वह बड़े प्रसन्न थे। मुझ से बार-बार सेना में भर्ती होने के लिये कह रहे थे।

पर उन बेचारो को क्या मालूम कि यह लड़के के वेश में कोई लड़की है।"

दोनों हँसने लगे। अहमद ने कहा—"तो तुमने पेशवा साहब को खूब बुद्धू बनाया ?" अहमद फिर हँसने लगा।

मस्तानी—"मजबूरी थी। अगर ऐसा न करती तो मेरा भेद खुल न जाता ? तब वह मुझे बुद्धू बनाने लगते।"

अहमद हँसने लगा।

मस्तानी ने पुनः कहा—"तुमने तो पेशवा साहब को देखा होगा अहमद ? वास्तव मे वह पेशवा होने योग्य है। देखने मे जितने सुन्दर है उतने बहादुर भी है। अल्लाह ने चाहा तो वह अपने उठाये हुए बीडे में सफलता प्राप्त कर लेगे।"

अचानक अहमद के चेहरे पर गभीरता फैल गई और उसने तनिक रूखे शब्दो मे पूछा—"तुम्हे मालूम है उन्होने क्या बीडा उठाया है ?"

मस्तानी—"क्यों नही मालूम है ? उनका कहना है कि वे अत्याचारी मुगलों का नाश करके देश मे शान्ति स्थापित करेंगे।"

अहमद—"तब तुम्हे नही मालूम है। उन्हे हम मुसलमानो से नफरत है और बदला लेने के विचार से वह मुसलमानो को जड से मिटा देना चाहते है। तुम हिन्दुओं की चालाकी को समझती नही हो।"

मस्तानी—"यह बात गलत है। अगर उन्हें ऐसा करना होता तो अब तक मराठा राज्य के अन्दर एक भी मुसलमान देखने को न मिलता। सब मार डाले गये होते।"

अहमद—"यह भी होगा। पहले यह हैदराबाद के निजाम को

पराजित तो कर लें। अभी उनको निज़ाम का भय है। निज़ाम के हारते ही फिर देखना, हम लोगों की कैसी दुर्दशा होती है।"

मस्तानी—"दुर्दशा क्या होगी? मुझे विश्वास नही है कि पेशवा साहब ऐसा नीच कार्य करेंगे और अगर ऐसा करते भी है तो इसमें बुराई क्या है? मुसलमानों ने क्या कुछ उठा रखा था या अब उठा रहे है? उन्होने क्या नहीं किया? अम्मी बताती है कि औरंगजेब के अत्याचारो से तो सारा हिन्दुस्तान कराह उठा था। अब अगर हिन्दू शक्तिशाली बनकर आज मुसलमानों को मिटाना चाहते हैं, तो क्या गलत करते हैं?"

अहमद ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा—"क्या पेशवा साहब को ऐसा करना चाहिये?"

मस्तानी—"क्यो नही करना चाहिये? इसमे आश्चर्य की क्या बात है? हिन्दुस्तान उनका है, सम्पत्ति उनकी है। मुसलमानों ने तो इनकी आपसी फूट के कारण इन्हें गुलाम बना लिया था।"

अहमद मस्तानी की बातों से चिढ़ता जा रहा था। उसने कठोर शब्दों मे कहा—"हिन्दुओ को हमारे कुरान में काफिर कहा गया है मस्तानी! उनके पक्ष में बोलना भी पाप समझा जाता है। इस्लाम इसे माफ नही करता।"

मस्तानी हँसकर बोली—"इस्लाम को तुमने समझा भी है या यो ही बके जा रहे हो। मैंने कुरान पढ़ी है और अब भी अम्मी से पढ़ती हूँ। कुरान मे ऐसा कुछ नही लिखा है। अल्लाह ने सबके साथ प्रेम से मिलकर रहने को कहा है। धर्म की ओर से ऐसी गन्दी बातें न किया करो अहमद! हिन्दू और मुसलमान अब दोनों इसी मिट्टी के है।"

अहमद—"मैं समझा ! पेशवा के रूप ने ऐसा जादू किया कि तुम अपना-पराया तक भूल गई हो ?"

मस्तानी उसी प्रकार मुस्कराती हुई बोली—"अगर ऐसा हो गया है तो इसमें बुराई क्या है ? पेशवा साहब ऐसे वीर और महान् पुरुष की ओर आकर्षित होना अचम्भा नही है।"

अहमद तिलमिला उठा—"तो अब तुम्हारा मुझसे कोई सम्बन्ध नही रहा, क्यो ?"

मस्तानी—"यह तुम्हारी समझ का फेर है। तुमसे मेरा सम्बन्ध जैसे पहले था वैसे अब भी है। मेरे हृदय मे छिछोरापन नही है।"

अहमद खड़ा हो गया और क्रोध में बोला—"अच्छी बात है। बताऊँगा। अभी तुमने अहमद को समझा नहीं है।" वह तेजी से निकल गया।
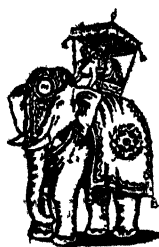
४

तीसरे दिन बाजीराव का पड़ाव उठ गया और वह अपनी सेना के साथ सतारा को चल पड़े परन्तु शीघ्र ही सुनने में आया कि वह पुनः पूना को आ रहे हैं और यहाँ से कर्नाटक की ओर जायेंगे। पूना निवासियो ने फिर उसी प्रकार स्वागत सत्कार की तैयारी की। बाजीराव आये। लोगो ने जयजयकार की और अपनी श्रद्धा का परिचय दिया।

बाजीराव ने लगभग एक सप्ताह तक पूना में रुकने का विचार किया था। इस कारण दूसरे दिन तो नही परन्तु तीसरे दिन से उनके आखेट का कार्यक्रम आरम्भ होगया। वह नित्य शिकार को जाने लगे। मस्तानी भी छिपे रूप से जाती और छिपे रूप से लौट आती। बाजीराव के प्रति उसका आकर्षण बढ गया था।

एक दिन जब बाजीराव घोड़े पर उड़ते हुए जंगल में चले जा रहे थे, तो मस्तानी ने दूर से अहमद को भी घोड़े पर उनके पीछे जाते हुए देखा। मस्तानी को सन्देह हुआ। उसने भी अपना घोड़ा बढाया और अधिक सतर्कता के साथ छिपती हुई अहमद के पीछे पीछे चलने लगी।

बाजीराव को जब अपने पीछे किसी घुड़सवार की आहट मिली

तो उन्होंने मुड़कर देखा। अहमद पीछे चला आ रहा था। वह मन-ही-मन अहमद की घुड़सवारी पर प्रसन्न हुए और अपने घोड़े की चाल धीमी की। शायद उन्होंने अहमद को साथ ले लेने के लिए सोचा था।

अहमद का घोड़ा समीप आया। अहमद ने इधर-उधर देखा और झट-से अपने भाले को तानता हुआ पेशवा को मारने ही वाला था कि अचानक एक भाला पीछे से अहमद के घोड़े के पुट्ठे पर आकर लगा। घोड़ा चीत्कार करता हुआ लड़खडाया और गिर पडा। अहमद के हाथ से भाला छूट गया और वह घोड़े से लुढ़कता हुआ दूसरी ओर जा गिरा।

घोड़े की कराह भरी हिनहिनाहट और उसके गिरने के शब्द से पेशवा चौक गए। उन्होने पीछे देखा, पर कुछ समझ न सके। वह घोड़े से कूदकर अहमद की सहायता के लिए दौडे। पेशवा के पहुँचने के पहले ही मर्दाने पोशाक में मस्तानी उसके पास पहुँच चुकी थी और उसने घूरते हुए कड़े शब्दों में पूछा—"क्यों अहमद अब इस नीचता पर उतर आये हो ? हद कर दी तुमने। यही इस्लाम की शिक्षा है ?"

अहमद बोलने में असमर्थ था। उसके मुँह और हाथों में अधिक चोट आई थीं। घुटने लहू-लुहान हो रहे थे।

पेशवा ने आते ही पूछा—"क्या हुआ ?" परन्तु जैसे ही उनकी दृष्टि मस्तानी पर पड़ी, वह कह उठे—"तुम युवक ? आज यहाँ फिर कैसे ? बात क्या है ?" पेशवा को अभी वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो सका था।

मस्तानी बोली—"यह आपको हत्या करने का प्रयत्न कर रहा

आँखे मारे शर्म के गड़ी जा रही थीं। उसने बहुत साहस बटोरकर कहा—"मस्तानी, मै बहुत लज्जित हूँ। मैं बता नही सकता, किस पागलपन में मुझसे यह नीच काम हो गया है। मैं तुमसे माफी चाहता हूँ।"

मस्तानी घोडे की रास पकड़े चल रही थी। वह बोली—"सच्चा प्रेम करना सीखो अहमद। सुख और शान्ति पाने के लिए इससे उत्तम रास्ता नही है।" उसने आगे और कुछ नही कहा—चुपचाप चलती रही।

दूसरे दिन पूना मे सूचना फैलते देर न लगी कि अहमद सब कुछ छोडकर कही चला गया है।

दो दिन बाद पेशवा ने कर्नाटक की ओर प्रस्थान कर दिया।

५

हैदराबाद का निजाम बहुत दिनों से इस प्रयत्न मे था कि किसी प्रकार मराठों में फूट डालकर मराठा राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया जाए। इस काम के लिए उसे दिल्ली के सम्राट् मुहम्मद शाह रंगीला से भी सहायता मिल रही थी। निजाम का जाल बिछ रहा था क्योकि वह समझता था कि बिना आपसी फूट के बाजीराव को युद्ध मे पछाडना सम्भव नही है।

बहुत परिश्रम के उपरान्त अन्त मे निजाम की धूर्तता सफल हुई। उसने कोल्हापुर के सरदार सम्भाजी को मिला लिया। सम्भाजी निजाम के कहने मे आ गया और उसने निजाम की सलाह से अपने को मराठा राज्य का स्वामी घोषित किया और इस आशय का एक पत्र शाहू को भी लिख दिया। पत्र पढ़कर शाहू चिन्तित हुए और तत्काल सम्भाजी को पत्र लिखकर इसका कारण पूछा। सम्भाजी ने कोई उत्तर नही दिया और वह निजाम के कहने के अनुसार सतारा पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगा। उधर निजाम ने एक और शैतानी की। उस ने अपने सूबेदार तुर्कताजखॉं, ईनाजखॉं और गयासखॉं को आदेश किया कि वे मराठे इलाको में घुसकर लूट मार आरम्भ कर दें। निजाम ने इतना ही नही किया वरन् उस-

ने रुपयो के बल पर कुछ चाटुकार मराठो को भी अपनी ओर मिला लिया और सतारा के आसपास के गाँवों मे छुटपुट लडाईयाँ आरम्भ करवा दी।

शाहू बड़ी उलझन मे पड गए। उन्होने पुन पत्र लिखकर सम्भाजी को समझाने का प्रयत्न किया। पत्र इस प्रकार था—

"श्री सम्भाजी,

मैं एक पत्र आपको लिख चुका हूँ परन्तु आपने कोई उत्तर नहीं दिया। जो कुछ मुझे मालूम हुआ है, उससे मै इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आपको मेरा राज्य-प्रबन्ध पसन्द नही है। ऐसा हो सकता है। उस पर मुझे आपत्ति नही है किन्तु यह समय आपसी भेदभाव का नही है। इस समय हमे एक होकर अपनी सगठित शक्तियो द्वारा मुगल प्रान्तो को अपने अधिकार मे करके स्वराज्य की नीव को दृढ करना है, जिस प्रकार हमारे पूर्वजो ने किया था। आप दक्षिण भारत को सम्भाले और मे उत्तर भारत को। और जो कूछ मुझे उत्तर मे प्राप्त हो, उसमे उचित भाग मै आपको दूँ और जो कुछ दक्षिण मे आपको प्राप्त हो उसमे आप मुझे दे। यही सही रास्ता है।"

पर सम्भाजी को यह बात कैसे पसन्द आती? वह तो निजाम की सहायता से पूरे मराठा राज्य का स्वामी बनने का स्वप्न देख रहा था। उसने शाहू के पत्र का उत्तर नही दिया। वह अपनी सेना लेकर हैदराबाद की ओर चल पड़ा। हैदराबाद में निजाम की सेना उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। दोनों सेनाएँ मिलकर सतारा पर आक्रमण करने वाली थी।

निजाम की सेना के साथ सम्भाजी सतारा को चल पड़ा।

बाजीराव इस समय कर्नाटक में थे, इस कारण सम्भाजी को और भी भय नही था। दूसरे किसी मे इतनी हिम्मत नही थी जो इन दो मिली सेनाओ को पराजित कर सकता। सम्भाजी सब स्थानों पर अपना अधिकार जमाता हुआ पूना आ पहुँचा। पूना पर भी उसका अधिकार हो गया। शाहू की सेना विवश थी। बिना योग्य सेनापति के वह कर भी क्या सकती थी ? फिर ऐसे समय जब आपस में फूट पड़ गई हो ?

पूना पर सम्भाजी के अधिकार की सूचना मिलते ही शाहू के हाथ-पैर ढीले पड़ गए। उन्होंने तत्काल अपने मन्त्रियों की बैठक बुलाई। बडी देर तक सोचने-विचारने के उपरान्त अधिकतर मन्त्रियो ने यही राय दी कि निजाम को बीच में डालकर किसी प्रकार सन्धि की वार्ता चलाई जाए। उनका कहना था कि निजाम को मराठा राज्य का कुछ भाग देकर उसे अपनी ओर मिलाया जा सकता है।

शाहू ने व्यथा भरे शब्दों मे कहा—"पर यह तो बडे अपमान की बात होगी। इतने परिश्रम के बाद बनी हुई यह प्रतिष्ठा योंही मिट्टी में मिल जाएगी ?"

एक मन्त्री बोला—"श्रीमान् ! इस समय इसके अतिरिक्त और कोई चारा नही है। 'घर का भेदी लका ढाहे' वाली समस्या जो आ खड़ी हुई है। मजबूरी मे सब कुछ करना पड़ता है श्रीमन्त।"

शाहू कुछ समय तक मौन सोचते रहे और अंत में उन्होंने सन्धि की बातचीत करना ही उचित समझा। उन्होंने कान्होजी भौसले पर वार्ता करने का भार सौपा। सभा समाप्त हुई और शाहू उठ खड़े हुए। तब तक एक सैनिक ने आकर अभिवादन किया और खड़ा हो गया।

"क्या है ?" शाहू ने पूछा ।

सैनिक—"पेशवा साहब अपनी सेना सहित सतारा के समीप आ गए है श्रीमन्त ।"

शाहू की बाँछे खिल गई । मन प्रसन्नता से नाच उठा । उन्होंने कान्होजी को रोक दिया और उसी समय अपने अँगरक्षकों के साथ बाजीराव से मिलने चल पडे ।

दोनो की भेट हुई । शाहू ने बाजीराव को गले से लगा लिया और फिर सारी बात कह सुनाई । बाजीराव ने उनको ढ़ाढ़स दिया और किसी प्रकार की चिन्ता न करने को कहा । दूसरे दिन बाजीराव ने युद्ध की घोषणा की और अपनी सेना को लेकर पूना की ओर बढ चले ।

बाजीराव के आगमन की सूचना मिलते ही सम्भाजी को दिन में तारे नजर आने लगे । बाजीराव से भिड़ने का साहस उसके अन्दर नही था । उसे अपनी जान अधिक प्यारी थी, इसलिए वह सेना सहित पूना छोडकर हैदराबाद को भाग चला । बाजीराव पूना होते हुए उसका पीछा करने लगे । उन्होंने निजाम को अपनी बदमाशी का मज़ा चखाने का निर्णय किया था और सदा के लिए निजाम राज्य का अन्त कर देने को ठाना था । 'न रहे बाँस, न बजे बाँसुरी' वाला संकल्प था ।

उधर सम्भाजी ने पहुँचकर निज़ाम को सारी स्थिति बतलाई । निज़ाम क्रोध में आगबबूला हो गया और सम्भाजी को उसकी कायरता पर काफी डाँटता फटकारता रहा । फिर उसने भी युद्ध की घोषणा की और अपनी विशाल सेना तथा बड़ी बड़ी तोपे लेकर बाजीराव को रौदने के लिए निकल पड़ा । उसने भी बाजीराव को

मिटा देने का निर्णय किया। वह बढता गया परन्तु उसने एक दूसरी चालाकी की। वह बाजीराव के सामने न आकर दूसरे मार्ग से पूना की ओर चल पड़ा। उसका इरादा था पूना पर अधिकार करते हुए सतारा पर अधिकार कर लेना। पर पेशवा बाजीराव का गुप्तचर विभाग बड़ा तगड़ा था। उन्हें एक एक बात की सूचना भी शीघ्र से शीघ्र मिला करती थी। निजाम वाली सूचना भी उन्हे शीघ्र मिली। वह मन ही मन मुस्कराये और तत्काल अपनी सेना को बुरहानपुर की तरफ मुड़ने का आदेश दिया। सैनिक बुरहानपुर की ओर मुड चले।

बुरहानपुर निजाम की बहुत बड़ी मडी थी, जिसे किसी भी दशा में निजाम ध्वंस होते नही देख सकता था। बाजीराव उसे भली-भांति समझते थे और इसी विचार से उनका उधर मुड़ना भी हुआ था। जैसे ही निजाम को उसकी जानकारी हुई, वह चिन्तित हो उठा। उसने पूना पर आक्रमण करने का विचार बदल दिया और तुरन्त बुरहानपुर की रक्षा के लिए लौट पडा। पेशवा की चतुराई काम कर गई।

अब निजाम ने सोचा कि पेशवा को खुले मैदान मे घेरकर उसकी धज्जियाँ उड़ा दी जाएँ क्योंकि उसके पास बड़ी बड़ी तोपे थी। परन्तु पेशवा बुद्धू तो थे नही। जब उनको निजाम के लौटने की सूचना मिली तो उन्होंने भी सतर्कता बरतनी आरम्भ कर दी। उन्होंने सोचा कि निजाम को उस स्थान पर लाया जाए, जहाँ उसकी तोपो का कोई उपयोग न हो सके, क्योकि उनके पास तोपे नही थी जो तोपों का जवाब तोपों से देते। इसलिए उन्होने निजाम को चकमा देना आरम्भ कर दिया।

दोनो सेनापति अपनी अपनी चतुराई में सफलता प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे। निजाम पेशवा को घेरकर खुले मैदान मे ले आने का प्रयत्न कर रहा था और पेशवा उसे पहाडी स्थान पर ले जाना चाहते थे। अन्त में पेशवा को ही सफलता मिली। गोदावरी पार करने पर भी जब निजाम को पेशवा नही दिखलाई पड़े तो उसे विवश होकर अपनी तोपों और दूसरे भारी भरकम सामानो को छोड़कर जल्दी जल्दी औरगाबाद की ओर बढना पड़ा। पहाड़ियो का यह प्रदेश बडा ऊबड खाबड़ था। साथ ही उधर पानी की भी बडी कमी थी परन्तु निजाम करता क्या, उसे इसी मार्ग से औरंगाबाद पहुँचना था। दूसरे मार्ग दूर के थे और सुरक्षित नहीं थे। निजाम जल्दी-जल्दी बढता गया। जब औरगाबाद दस कोस रह गया, तब उसके गुप्तचरों ने सूचना दी कि पेशवा की सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया है। खबर सुनकर निजाम हक्का-बक्का रह गया। उसकी चिन्ता बढ गई। अब वह और जल्दी औरंगाबाद बढ़ने लगा।

पेशवा का मनोरथ सिद्ध हुआ। वह निजाम को जिस स्थान पर लाना चाहते थे, वहाँ ले आये। उनकी सेना निजाम को चारों ओर से घेरती हुई सिकुड़ती चली आ रही थी। इस समय निजाम की दशा मकडी के जाले मे फँसी मक्खी की भाँति हो गई थी। धीरे-धीरे मराठी सेना और घिरती गई और फिर यह घेरा इतना जटिल हो गया कि अगर निजाम अपनी सहायता के लिए कहीं सूचना भी भेजना चाहे तो नहीं भेज सकता था। पेशवा अपने घेरे को और जटिल बनाते गये।

पालखेड़ नामक स्थान पर निजाम पूर्णरूप से घेर लिया गया।

निजाम की सेना को पानी और भोजन तक मिलना बन्द हो गया। निजाम की आँखो के सामने अधेरा छा गया। उसकी हेकड़ी भूल गई। सारी आशाओ पर पानी फिर गया। उसके लिए सुलह के अतिरिक्त और कोई चारा नही रह गया। युद्ध करने पर उसकी सारी सेना चक्की मे गेहूँ की भाँति पिस सकती थी। विवश निजाम को सन्धि के लिए पेशवा के पास दूत भेजना पडा और अन्न-जल के लिए प्रार्थना करनी पड़ी।

पेशवा की अभिलाषा पूरी हुई। उन्होने वह काम कर दिखाया, जिसकी किसी ने कल्पना तक नही की थी। उन्होने आज मुगलों पर विजय पाई थी। उन्होने पानी और भोजन का प्रबन्ध कराया और निजाम को सेना सहित मुन्शी शिवगाम नामक स्थान पर ले आए। उधर उन्होने शाहू के पास आदमी भेजा और उनसे संधि की शर्तें पुछवाई। उनका विचार पूर्णरूप से निजाम राज्य को खत्म करके मराठा राज्य मे मिला लेने का था।

दूसरे दिन निजाम, पेशवा के डेरे मे आया और बहुत-सी वस्तुएँ उपहार में भेट की। पेशवा ने उसे सम्मान-पूर्वक बिठलाया। कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के उपरान्त निजाम ने पूछा—
"सुलह की क्या-क्या शर्तें होगी ?"

पेशवा ने उत्तर दिया—"अभी मैं कुछ नही बता सकता। सतारा आदमी भेज रखा है। वहाँ से जैसा आदेश आयेगा, उसी के अनुसार शर्तें रखी जाएँगी। अभी आपको प्रतीक्षा करनी होगी।"

निज़ाम सिर झुकाये बोला—"ठीक है। जैसा आप उचित समझ।" फिर वह पेशवा से अनुमति लेकर चला गया।

सातवे दिन शाहू का पत्र लेकर पेशवा का आदमी लौटा। पत्र

की अन्तिम पक्तियाँ इस प्रकार थी—"तुम्हे किसी भी दशा में न तो निजाम को किसी प्रकार की क्षति पहुँचानी है और न ही उसकी भावनाओ को ठेस लगानी है। यही मेरा आदेश है।"

पेशवा रात भर करवटे बदलते रह गए। सब किया कराया मिट्टी हो गया। पर हो क्या सकता था ? आदेश तो आदेश ही था। दूसरे दिन सन्धि हो गई। फिर भी बाजीराव ने अपनी ओर से एक शर्त रख ही दी। शर्त थी कि निज़ाम के सारे सूबो मे पेशवा की ओर से एक व्यक्ति तैनात किया जाएगा, जिसकी राय के बिना उन सूबों में कोई भी सामाजिक या राजनीतिक काम नही हो सकेगा। निज़ाम ने स्वीकार कर लिया। सेनाएँ अपनी-अपनी दिशा को मुड़ गइ।

शाहू ने निज़ाम के साथ ऐसी दयालुता क्यो दिखलाई थी, इसके विषय मे जानकारी तो नही है परन्तु यह दयालुता कितनी घातक सिद्ध हुई है, इसे इतिहास आज भी दुहरा रहा है।

६

बाजीराव की इस विजय पर पूरे मराठा राज्य में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सतारा में उसके स्वागत हेतु बड़ी तैयारी होने लगी परन्तु पूना में भी उनके आगमन पर जो उत्सव और आनन्द प्रदर्शित किया गया वह अनोखा था। नगर मे दीवाली मनाई गई। दूसरे दिन खुले दरबार में नज़र पेश की गई और उनकी वीरता के गीत गाये गए। संध्या को नृत्य का आयोजन था, जिसमें मस्तानी विशेष रूप से नाचने वाली थी।

सध्या समय झिलमिलाते झाडों के प्रकाश मे नृत्य आरम्भ हुआ। अन्य नर्तकियों के नृत्य समाप्त होने पर अन्त मे मस्तानी उठाई गई। पेशवा के पास बैठे हुए उनके विश्वासपात्र सेनापति पिलाजी यादव ने धीरे से कहा—"आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि यह नर्तकी केवल नर्तकी ही नही है वरन् वीरता और शिकार में अपनी बराबरी नही रखती है। घुड़सवारी तो कमाल की करती है। पूना वालों को इस पर बड़ा गर्व है।"

पेशवा ने तनिक अचम्भे से अपने सेनापति की ओर देखा और पूछा—"इसका नाम ?"

"मस्तानी।"

पेशवा—"मस्तानी ?"

सेनापति—"जी श्रीमन्त। नाच और गाना सुनकर श्रीमन्त को और भी आश्चर्य होगा। नाचने-गाने मे भी यह उतनी ही निपुण है।"

"अच्छा !" पेशवा मस्तानी को देखने लगे।

मस्तानी नाचने के लिये खड़ी थी। उसने आगे बढकर पेशवा को सलाम किया और बोली—"श्रीमन्त को मैं एक मीराबाई का भजन सुना रही हूँ।" वह पीछे हटी और गाने लगी—

सखी री मै तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोय !

... .

पेशवा आवाज सुनकर चौके। स्वर जाना-पहिचाना-सा था। उन्होंने मस्तानी को अधिक ध्यान से देखा। आँखे वैसी ही थी। नाक भी वही थी। उनकी दृष्टि फिर गरदन पर गई। उनका दिया हुआ हार चमक रहा था। वह बड़ी उलझन में पड़ गये। उन्होने जगल वाले युवक और मस्तानी की तुलना की। उन्हें विश्वास हो गया कि अहमद के भाले से बचाने वाली यही मस्तानी वहाँ मर्दाने वेश में थी।

मस्तानी बड़े हावभाव के साथ नाच-नाचकर गा रही थी। दरबार में सन्नाटा खिच आया था। लोग झूम रहे थे। मस्तानी के कठ मे जादू था। अन्त मे भजन समाप्त करते हुए वह पेशवा के सामने आकर बैठ गई।

पेशवा ने अपने गले का हार निकालकर उसके गले में डाल दिया और कहा—"यह हार तुम्हारे नाचने और गाने पर पुरस्कार है। समझ मे आया ?" वह मुसकराने लगे।

पेशवा की बातो मे जो छिपा भेद था उसे मस्तानी समझ गई।

इसलिये उसने भी उसी प्रकार का उत्तर दिया—"मेरा सौभाग्य है कि श्रीमन्त ने मुझे अभी तक याद रखा।" वह उठकर खड़ी हो गई और दूसरा भजन सुनाने लगी।

एक-एक करके उसने चार भजन सुनाये। उसके उपरान्त पेशवा उठ खड़े हुए। दरबार भग हो गया।

मस्तानी की वीरता, उसकी सुन्दरता और नाचने-गाने वाली कला ने पेशवा बाजीराव को मोह लिया था। वह रात भर नाना-प्रकार की बाते सोचते रहे, परन्तु अन्त मे उन्होने मस्तानी से विवाह करने का निर्णय कर ही लिया। दूसरे दिन वह सतारा नही गए, रुक गए। आधी रात आने पर वह मुँह पर कपडा लपेटे मस्तानी के घर पहुँचे। दरवाजे पर थपकी दी। मस्तानी की माँ अभी जग रही थी और रेहल पर कुरान रखे पढ़ रही थी। दरवाजे पर थपकी की आवाज सुनकर वह चौकी और आकर दरवाजा खोला—"कहिये ?" उसने पूछा।

पेशवा—"कुछ विशेष कार्य है। अन्दर बैठकर बताना चाहता हूँ।"

"आईये"। बिना किसी हिचक के मस्तानी की माँ ने उन्हे कमरे मे लाकर बिठलाया।

पेशवा ने बैठते हुए पूछा—"आप मस्तानी की माँ है ?"

मस्तानी की माँ—"जी हाँ! और आप ?"

पेशवा ने अपने मुँह का कपड़ा खोल दिया।

मस्तानी की माँ चौक उठी—"पेशवा साहब! इतनी रात को ? श्रीमन्त ने बुलवा भेजा होता!"

पेशवा मुसकराते हुए बोले—"कुछ काम ऐसे भी होते है जहाँ

स्वय जाना पड़ता है। मस्तानी को बुलवाइए। मैं उससे कुछ बाते करना चाहता हूँ।"

"जी।" कहकर मस्तानी की माँ चली गई।

थोड़ी देर बाद अकेली मस्तानी सिर झुकाये कमरे मे आई। पेशवा ने बैठने को कहा। वह बैठ गई। इस समय उसे बडी लज्जा आ रही थी। पेशवा होठो पर मुसकान बिखेरते हुये बोले—"तुमने मुझे खूब बुद्धू बनाया, क्यों?"

मस्तानी ने धीरे से उत्तर दिया—"क्या करती? अगर बुद्धू न बनाती तो श्रीमन्त के इतने निकट आने का सौभाग्य कहाँ प्राप्त होता, पर श्रीमन्त ने इतनी रात मे कैसे कष्ट करने की कृपा की है?"

पेशवा—"अब मैं तुम्हें बुद्धू बनाने आया हूँ। मेरी बारी भी तो आनी चाहिये।" वह हँस पड़े।

मस्तानी मन ही मन हँसती हुई चुप रही।

पेशवा ने पुनः कहा—"मैं तुम्हारे पास एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ।"

मस्तानी—"श्रीमन्त आज्ञा करे!"

पेशवा—"मै तुम से विवाह करना चाहता हूँ।"

मस्तानी ने सिर ऊपर उठाया और अपनी बड़ी बड़ी आँखे फाड कर पेशवा को निहारने लगी। असम्भव भी सम्भव हो सकता है, यह उसे आज समझ में आया। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा लेकिन फिर भी वह मौन रही।

पेशवा फिर बोले—"तुम्हें मेरी बातो पर विश्वास नही हो रहा होगा?"

मस्तानी बोली—"विश्वास भी हो रहा है और नही भी हो

रहा है श्रीमन्त! मै मुसलमान हूँ और मुसलमानों में भी नीच, एक वेश्या की लड़की। आप ब्राह्मण है और साथ ही मराठा राज्य के पेशवा भी है। आपका सम्मान, आपकी ख्याति······।"

पेशवा बीच मे बोल उठे—"इन सब बातो की जानकारी मुझे अच्छी तरह है मस्तानी। मै हिन्दू-मुसलमान मे भेद नही मानता हूँ।"

मस्तानी—"आप न मानते हो लेकिन आपका समाज तो मानता है। वह आपको कैसे अनुमति देगा ?"

पेशवा—"मुझे उनकी अनुमति की आवश्यकता नही है। मै पुरुषार्थ पर विश्वास करता हूँ और हृदय के सम्बन्ध को सच्चा सम्बन्ध मानता हूँ। सब कुछ सोचने-विचारने के बाद भी मेरे हृदय ने तुम से विवाह करने का निर्णय किया है।"

मस्तानी—"श्रीमन्त को मैं सीख देने की क्षमता तो नही रखती, फिर भी मेरा अनुरोध है कि श्रीमन्त इस प्रश्न पर कुछ और सोच ले। इस कार्य से श्रीमन्त का समाज श्रीमन्त के विरुद्ध हो जाएगा और वह नानाप्रकार के अड़ंगे खड़ा करने लगेगा।"

पेशवा—"उससे उसकी हानि होगी, मेरा कुछ नही बिगड़ेगा। मै जिस लगन के साथ अपने कर्तव्यों का पालन इस समय कर रहा हूँ, उसी लगन के साथ बाद मे भी करता रहूँगा। यदि समाज सहयोग देगा तो उसकी उन्नति होगी और न देगा तो पछतायेगा। पर अब कोई शक्ति तुम को मुझ से अलग नही रख सकती है।"

मस्तानी ने एक दूसरा प्रश्न उठाया—"सो तो ठीक है श्रीमन्त। यह तो मेरे लिये महान सौभाग्य की बात है लेकिन मै समझती हूँ कि श्रीमन्त ने एक दूसरे जटिल प्रश्न पर विचार नही किया है।"

पेशवा—"कौन-सा प्रश्न ?"

मस्तानी—"श्रीमन्त की धर्म पत्नी के विरोध वाला प्रश्न। क्या वह ऐसा करने के लिये आपको अनुमति दे सकेंगी? मै तो समझती हूँ, कभी नहीं दे सकेंगी। मुझे प्राप्त करके आप उन्हें गवा बैठेगे।"

पेशवा हँसने लगे और खड़े होते हुए बोले—"ऐसा कुछ नही होगा। तुम निश्चिन्त रहो। अब मै जा रहा हूँ, कल सतारा चला जाऊँगा। वहा से लौटने पर मै बडी धूमधाम के साथ तुम्हारे संग विवाह करूँगा। तुम तैयार रहना।" वह कमरे से बाहर निकले।

मस्तानी उन्हें दरवाजे तक छोड़ने आई। वह चले गए।

अठत्तर वर्षीय बुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल बड़े वीर और पराक्रमी व्यक्ति थे। शिवाजी की वीरता से प्रभावित होकर वह अपने जीवन के प्रारम्भ से ही मुगलो के विरुद्ध लड़ते रहे थे और कभी का अपने राज्य में मुगलो को घुसने नही दिया था। यहाँ तक की औरगजेब जैसे शक्तिशाली और अत्याचारी सम्राट् को भी नाकों चने चबवा दिये थे। औरगजेब मरते दम तक प्रयत्न करता रह गया था पर उसका बुन्देलखण्ड पर अधिकार न हो सका था। लेकिन इधर कुछ वर्षों से इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मदखाँ बगश ने छत्रसाल को बहुत परेशान कर रखा था। आये दिन उनसे बगश की मुठभेड हुआ करती थी और बार-बार उन्हे पराजित होकर इधर-उधर भागना पड़ता था। यह सब उनके बुढापे के कारण हो रहा था। जवानी की बात कुछ और होती है और बुढापे की कुछ और। पर फिर भी छत्रसाल अपने कर्त्तव्य पर दृढ थे। वह जीते जी बुन्देलखण्ड पर अत्याचारियो का झण्डा लहराता नही देख सकते थे। वह बार-बार हारते और बार-बार सेना एकत्र करके बगश का सामना करते।

उधर बंगश ने भी निश्चय किया कि इस बार छत्रसाल की सत्ता पूर्णरूप से मिटाकर बुन्देलखण्ड को भी इलाहाबाद मे मिला लिया

जाए। रोज-रोज का झगड़ा क्यों रखा जाए ? अत. उसने भयकर तैयारी के साथ बुन्देलखण्ड पर चढाई कर दी। सामना करने के लिए राजा छत्रसाल आए। बगश ने पराजित कर दिया। छत्रसाल ने पीछे हटकर पुन. सामना किया। उनके सैनिको ने कोई कसर उठा न रखी पर छत्रसाल को सफलता न मिली। उन्होने पीछे हट-कर जैतपुर के दुर्ग मे शरण ली।

बगश ने दुर्ग घेर लिया और दुर्ग के अन्दर सामान जाना बन्द कर दिया। दिन बीतने लगे। दुर्ग के अन्दर का गल्ला धीरे-धीरे समाप्त होने लगा और कुछ दिनों बाद भोजन के बिना सब की दशा बिगडने लगी। छत्रसाल ने भूख से तडप-तड़प कर मरने से उत्तम समझा बैरियों से लडकर मरना। उन्होंने अपने सैनिको से राय ली। सभी लडने के पक्ष मे थे। छत्रसाल ने एक सैनिक को कुछ कागज पर लिख कर दिया और बोले—"यह पत्र पेशवा बाजीराव को देना है। पहुँच सकोगे वहाँ तक ?"

सैनिक—"जब तक इस तन में रूधिर बहता रहेगा तब तक महाराज यह सेवक सतारा के रास्ते पर बढता ही जाएगा।"

छत्रसाल ने उसकी पीठ ठोंकी और फिर सैनिको को ललकारते हुए वह बाहर निकले। पत्र वाहक भी बाहर निकला और अपने को दुश्मनों की आँखों से बचाता हुआ सतारा की ओर उड़ चला।

मुट्ठी भर बुन्देले बगश की विशाल सेना के सामने कब तक टिक सकते थे, फिर भी उन्होंने युद्ध मे मुगलों के छक्के छुड़ा दिये। छत्रसाल ने तो यमराज का रूप धारण कर लिया था। उनकी तलवार गाजर-मूली की भाँति दुश्मनों का सिर काट रही थी। पर यह कब तक ? उनके शरीर के अंग-अग पर घाव के निशान बन

चुके थे। सारा शरीर लहूलुहान हो रहा था। अत मे उनके पैर लड़खडाये और वह पृथ्वी पर गिर पडे। बगश ने उन्हे बन्दी बना लिया।

उधर दिन और रात का बिना ध्यान किये छत्रसाल का पत्र वाहक सतारा पहुँच ही गया। सतारा मे बडी धूम-धाम थी। पेशवा के स्वागत में नानाप्रकार के नित्य आयोजन हो रहे थे। पत्रवाहक को पेशवा से मिलने मे कुछ कठिनाई हुई परन्तु अन्त में उनकी भेट हो गई। उसने छत्रसाल का पत्र उन्हे दिया। पेशवा ने पत्र खोलकर देखा। उसमे केवल दो पक्तियाँ लिखी थी—

जो गति ग्राह गजेन्द्र की सो गति जानहु आज।
बाजी जात बुन्देल की राखो बाजी लाज॥

पेशवा ने सिर उठाकर पत्र वाहक की ओर देखा। पत्र वाहक ने सारा हाल कह सुनाया। हाल सुनकर पेशवा की आँखो मे पानी भर आया। उन्होने उसी समय पिलाजी यादव को बुलाया और सेना की तैयारी का आदेश दे दिया। पेशवा के सामने उनका कर्तव्य पहले था। वह अपनी हँसी-खुशी, सुख, आनन्द, धन-दौलत, और अन्त मे प्राण तक भी कर्तव्य पालन की पूर्ति मे न्योछावर कर सकते थे। वह मस्तानी के विवाह को भी भूल गए और दूसरे ही दिन बुन्देलखण्ड को प्रस्थान कर दिया।

पेशवा रात-दिन यात्रा करते हुए महोबा पहुँच गए। गोरखार पर्वत के समीप छत्रसाल के लडके ने पेशवा से भेट की और पिता के बन्दी होने का समाचार सुनाया। पेशवा को बडा दुख हुआ। रात भर रुककर दूसरे ही दिन बगश पर आक्रमण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया।

रात समाप्त हो चली थी। सबेरा होने को आया। पेशवा उठ कर रावटी से बाहर आए और कुछ सोचते हुए टहलने लगे। तब तक एक सैनिक ने आकर निवेदन किया—"श्रीमन्त से राजा छत्रसाल-जी मिलना चाहते हैं।"

"छत्रसालजी ?" पेशवा ने चकित होकर पूछा।

"जी श्रीमन्त।"

पेशवा—"कहाँ है ?"

सैनिक—"बाहर।"

पेशवा स्वय दौड़े। सामने पेशवा को आते देखकर छत्रसाल ने आगे बढकर उन्हें गले से लिपटा लिया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। मारे आनन्द के उनके मुँह से आवाज़ तक नही निकल रही थी।

जब पेशवा अलग हुए तो छत्रसाल ने अपनी पगड़ी उतारी और पेशवा के पैरो पर रखने ही वाले थे कि पेशवा ने छत्रसाल के हाथों को पकड़ लिया और कहा—"राजा साहब, मुझे लज्जित न करें। मुँह दिखाने योग्य नही रह जाऊँगा।"

छत्रसाल उसी प्रकार रोते हुए बोले—"गज को भगवान इसी प्रकार मिले थे पेशवा साहब ! आपने बुन्देलों की नाक रखली। निर्बलों के बलराम मिल गये।"

पेशवा उन्हें हाथ का सहारा देकर अपनी रावटी में ले आये और आदर सहित आसन पर बिठलाकर स्वयं नीचे बैठ गए। उन्होंने कहा—"आज आपकी सेवा मे अपने को पाकर धन्य हुआ राजा साहब ! यह सौभाग्य सब को प्राप्त नही हो सकता। अगर गणपति ने चाहा तो अत्याचारी मुग़ल इस भूमि पर दुबारा पैर नही रखने

पाएँगे। आप यहाँ विश्राम करें और मुझे अवसर दें कि मैं आपकी सेवा करके अपने स्वर्गीय स्वामी महाराज शिवाजी की आत्मा को संतुष्ट कर सकूँ।"

छत्रसाल चुप रहे।

कुछ क्षण रुककर पेशवा ने मुसकराते हुए कहा—"राजा साहब ने बंगश को अच्छा चकमा दिया।"

छत्रसाल—"क्यों न देता? मेरे गुरु शिवाजी ही तो थे। जब वह औरंगजेब के बन्दीगृह से निकल सकते थे तो क्या मैं बंगश के बन्दीगृह से नहीं निकल सकता हूँ?"

पेशवा हँसने लगे—"बिल्कुल निकल सकते हैं और निकल भी आये हैं।" फिर दोनों में युद्ध सम्बन्धी बातें होने लगीं।

तीसरे दिन पेशवा ने आगे बढ़कर मुहम्मद खाँ बंगश को ललकारा। बंगश तैयार था। वह सामना करने के लिये आगे आया। पेशवा ने आकाश में अपनी तलवार चमकाते हुए कहा—"हर हर महादेव।" तब उसके तीस हजार घुड़सवारों ने कहा—"हर हर महादेव, हर हर महादेव।"

उधर बंगश के सैनिकों ने भी नारे लगाये—"अल्लाहो अकबर" और जूझ पड़े। घमासान युद्ध होने लगा। हजारों के सिर धड़ से अलग हो गये। जमीन लाल हो उठी। पेशवा ने पुनः अपने सैनिकों को ललकारा। फिर क्या था? मराठों ने प्रलय मचा दिया। बंगश के सैनिक पीछे हटने लगे। बंगश ने बढ़ावा दिया परन्तु जब निज़ाम ने ही घुटने टेक दिये थे तो बंगश क्या गिनती में था? बंगश की सेना पीछे हटती ही गई। विवश होकर बंगश को भी अपनी जान बचानी पड़ी और वह बहुत पीछे आकर रुका। उसने तुरन्त दिल्ली सम्राट के

पास सहायता के लिये खबर भेजी और साथ ही अपने लडके कयूम खॉ के पास भी।

फौरन कयूम खॉ एक बडी सेना लेकर अपने पिता की रक्षा के लिये दौड़ा। पेशवा के गुप्तचरो ने सूचना दी। पेशवा ने अपनी कुछ सेना वही छोडी और शेष सेना लेकर वह कयूम खाँ से जा भिड़े। वह दोनों को मिलने देना नही चाहते थे। पेशवा ने विकट युद्ध किया। कयूम खाँ को अपने प्राणो के लाले पड गये। वह सब कुछ छोड़कर भाग चला। पेशवा विजयी हुए। बहुत अधिक सामान हाथ लगा, जिसमें तीन हजार घोड़े और तेरह हाथी विशेष थे।

इधर से लौटकर पेशवा ने बगश को घेर लिया। मुगलों को भोजन तक मिलना बन्द हो गया। बगश की हेकडी भूल गई। क्या करे क्या न करे, वह अब निर्णय नही कर पा रहा था। दिल्ली से सहायता आने की आशा पर कुछ दिनो तक और रुका। सेना की दशा और बिगड़ गई। दिल्ली से सहायता नही आई। बंगश को आन से अधिक अपनी जान प्यारी थी। उसने पेशवा के पास संधि-वार्ता के लिये अपना दूत भेजा। पेशवा ने उससे कहा—"मुहम्मद खाँ बंगश सकुशल इलाहाबाद लौटाये जा सकते हैं लेकिन उन्हें लिखित प्रतिज्ञा करनी होगी।"

दूत—"वह क्या ?"

पेशवा—"उन्हे प्रतिज्ञा करनी होगी कि भविष्य में वह फिर कभी बुन्देलखण्ड पर आक्रमण नही करेंगे। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड पर राजा छत्रसाल का एकमात्र अधिकार होगा।"

दूत लौट गया और दूसरे दिन बंगश से लिखवा लाया। संधि हो गई। पेशवा ने बगश को इलाहाबाद लौट जाने का आदेश दे दिया।

उसी जैतपुर के दुर्ग में बड़े सजधज से दरबार लगा। वृद्ध छत्रसाल फूले नही समा रहे थे। उन्होंने अपने दोनों पुत्रों से पेशवा के चरण स्पर्श कराये और गद्गद कंठ से बोले—"पेशवा साहब! आज से इनकी देखरेख का भार आप पर है। अब आप ही इनके पिता है, भाई है और संरक्षक है। सारा काम पूरा हो गया। अब मुझे अवकाश चाहिये।"

पेशवा ने बढकर छत्रसाल के पैर स्पर्श किये और दोनो राजकुमारो को सदैव छोटे भाइयो की भाँति देखरेख करते रहने की कसम खाई। सारा दरबार जयजयकार से गूंज उठा। छत्रसाल ने उसी समय बुन्देलखण्ड के तीन हिस्से किये और एक-एक भाग तीनों को दे दिया। पेशवा के हिस्से मे कालपी, हाटा, सागर, सिरोंज, कुच और हृदयनगर का भाग पड़ा।

एक सप्ताह रुकने के उपरान्त पेशवा ने छत्रसाल से विदा ली। छत्रसाल ने आँसू भरे नेत्रो से गले लगाकर बारबार आशीर्वाद दिया। पेशवा की आँखे भी भर आई थी। वह छत्रसाल के पैर स्पर्श करते हुए घोड़े पर जा बैठे। घोड़ा बढ चला।

८
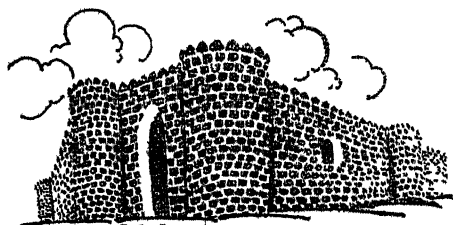
बाजीराव पेशवा की पत्नी काशी-बाई पूना आ गई थी और अपने पति के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। पेशवा बुन्देलखण्ड से वापस आए। स्वागत-सत्कार जिस धूमधाम से होना चाहिए हुआ। बहुत पहले से पेशवा जिस महल को पूना मे बनवा रहे थे वह बनकर तैयार हो गया था। अत. शुभ दिन देखकर गृहप्रवेश हुआ और पेशवा परिवार सहित महल में आ गए। महल का नाम 'शनिवार वाड़ा' रखा गया।

अभी तक पेशवा मस्तानी से मिलने नही जा सके थे। उधर मस्तानी भी उनके आगमन की नित्य प्रतीक्षा कर रही थी। उसे पेशवा से सच्चा प्रेम था और साथ ही विश्वास भी था कि पेशवा भी उससे उसी प्रकार का प्रेम करते है, फिर भी उसके दिमाग में उलझन तो बढ ही गई थी। पूना में रहने पर भी पेशवा उससे मिलने नही आये थे, इसका कारण वह समझ नहीं पा रही थी। उसके हृदय में बड़ी पीडा थी, पर उस पीड़ा को सहन करने के अतिरिक्त और कोई चारा नही था।

आज पेशवा मस्तानी के यहाँ जाने वाले थे परन्तु किसी कारण-वश उन्हें फिर रुक जाना पड़ा। उन्होंने दूसरे दिन जाने का निश्चय किया। रात में भोजन के उपरान्त जब सोने को हुए तो काशीबाई ने पूछा—"क्या नीद आने लगी ?"

पेशवा ने करवट बदली—"नही तो। क्यों, कुछ पूछना चाहती हो?"

काशीबाई—"हाँ।"

पेशवा—"कहो, क्या है?"

काशीबाई ने पूछा—"मुझे विश्वास तो नही है, फिर भी मैंने सोचा कि आप से पूछकर आपको इस अफवाह की जानकारी करा दू। क्या आप मस्तानी नाम की किसी मुसलमान वेश्या से विवाह करने जा रहे हैं?"

पेशवा ने बिना किसी हिचक के बड़ी सरलता से कह दिया—"हाँ काशी! यह अफवाह नही, सत्य है।"

काशीबाई अपने पति को अवाक् देखती रह गई। उसे अपने कानों पर विश्वास नही हुआ। उसने मिनट-दो-मिनट पेशवा को निहा-

रते रहने के उपरान्त पुन पूछा—"मुसलमान वेश्या के साथ ?"

पेशवा होठों मे मुस्कराये—"तुम्हे मुसलमान से आश्चर्य हो रहा है या मेरी दूसरी शादी से ?"

काशीबाई—"मुझे दूसरी शादी से क्यों आश्चर्य होने लगा ? आप दस-पाँच शादियाँ कर ले, मेरे लिए कोई अन्तर नही पड़ सकता। पर आप मुसलमान वेश्या से विवाह करेंगे, इसे स्वप्न मे भी नही सोचा जा सकता था। क्या आपको अपनी शक्ति पर इतना घमंड हो गया है कि न ईश्वर का भय रहा और न धर्म-समाज का ? एक औरत के पीछे आप बाप-दादो के नाम पर कलंक लगाकर नरक के भागी बनने को तैयार हो उठे है ? आपकी बुद्धि भ्रष्ट तो नही हो गई है ? ऐसा अनर्थ ? राम राम ! जिस मुसलमान जाति को मिटाने के लिए आपने बीड़ा उठाया है, उसी मुसलमान जाति की लड़की को अपनी स्त्री बना रहे है ? मैं नही ...।"

पेशवा ने बीच में टोक दिया—"तुमने गलत समझा है काशी। मैंने मुसलमान जाति को नही वरन् मुसलमान अत्याचारियो को मिटाने का बीड़ा उठाया है। हिन्दू-मुसलमान में मैं कोई भेद नही बरतता हूँ।"

काशीबाई ने तनिक चिढकर कहा—"तो आप भी मुसलमान क्यों नही हो जाते है ? फिर किसी को कुछ कहने का अवसर नही रह जायेगा। मस्तानी के रूप का जादू आप पर यहाँ तक छा गया है कि आप अपना धर्म-कर्म तक भूल गए ?"

पेशवा हँसने लगे—"तुम कहोगी तो मुसलमान भी बन जाऊँगा लेकिन पहले जरा ठंडे दिमाग से कुछ सोचने की कोशिश तो करो। मै तुमसे पूछता हूँ कि हिन्दुओं और मुसलमानों का बनाने वाला ईश्वर एक है या दो ?"

काशीबाई—"एक ।"

पेशवा—"क्या हम हिन्दुओं के शरीर की बनावट और मुसलमानो के शरीर की बनावट मे कोई अतर है ?"

काशीबाई—"नही ।"

पेशवा—"तब हिन्दू और मुसलमान में कैसा भेद ? उन्हे नीची नजर से देखने का क्या तुक ? उनसे घृणा क्यों की जाय ? धर्म की रूढ़ियो को न पकड़ो काशी ! जो वास्तविकता है, उसे समझने का प्रयत्न करो ।"

काशीबाई ने और चिढ़कर कहा—"वास्तविकता के विषय मे आप जैसी समझ मेरे पास कहाँ हो सकती है, लेकिन मै पूछती हूँ कि फिर इन मुसलमानो से लडने की क्या आवश्यकता है ? सब हिन्दू मुसलमान क्यो नहीं बन जाते है ? हमारे उनके बीच में यही झगड़ा विशेष है न ? आपको भी रात-दिन मारे-मारे फिरने से छुटकारा मिल जाएगा ।"

पेशवा—"अगर सबकी बुद्धि में यह बात धँस जाए तो बहुत उत्तम है। फिर हिन्दू मुसलमान तो क्या, सारा संसार एक धागे में बध सकता है। तब दुनियाँ मे दुख नाम की कोई चीज नही रह जाएगी। पर धूर्त और धर्म के ढोगी ठेकेदार ऐसा होने कहाँ दे रहे है ? ऐसा होने पर उनके सुख और सम्मान में कमी नही आजाएगी ?"

काशीबाई ने व्यग किया—"तो आप धूर्तों और ढोगी ठेकेदारों को चुनौती देकर ससार को एक धागे में बाँधने जा रहे हैं, क्यो ?"

पेशवा काशीबाई के भावों को समझते हुए भी उसी प्रकार मुस्कराकर बोले—"इतना समर्थ कहाँ हूँ काशी ! अकेला चना कही भाड़ फोड़ सका है, लेकिन हाँ कुछ-न-कुछ आवाज करके भयभीत तो

कर ही सकता है और मै वही कर रहा हूँ।"

काशीबाई—"फिर ठीक है। आप भयभीत करने के चक्कर में अपने जीवन के सग-सग बच्चों के भी जीवन को घृणित और अपमानित कर दीजिये। आप तो अपनी तलवार के बल पर अभी जो चाहे कर रहे हैं, पर जिस दिन यह शक्ति न रह जाएगी, उस दिन यही ठेकेदार आपकी कैसी दुर्दशा करेंगे, इसे आपने कभी सोचा है ?"

पेशवा—"तो तुम्हारी सलाह है कि मै पाप को पाप समझकर इसलिए उसके विरुद्ध आवाज न उठाऊँ कि इससे मेरे व्यक्तिगत और पारिवारिक सुखो का अपहरण होता है ?"

काशीबाई—"नही ! सुखो के अपहरण होने का प्रश्न नही है, प्रश्न है अपने धर्म-समाज का और बहुमत का। बहुमत जिसे पाप कहेगा वह पाप है और जिसे पुण्य कहेगा, वह पुण्य है। आप की अकेली आवाज कुछ नही कर पाएगी।"

पेशवा इतनी देर बाद कुछ गम्भीर होकर बोले—"यह तुम्हारी नासमझी है। भगवान् कृष्ण ने सत्य का सहारा पकडकर महान शक्तिशाली कौरवो का विरोध किया और अंत में पॉडवो को विजयी बनाकर सिद्ध कर दिया कि अच्छे मार्ग पर चलने वाला सदा विजयी होता है। ऐसा हुआ या नही ? तुम्ही सोचो, कौरवो के सामने पॉडवों की क्या विसात थी ? सारा बहुमत उन्ही के साथ तो था ?"

काशीबाई के पास अब कोई उत्तर नही था, पर वह अपनी हठधर्मी को भी नही छोड सकती थी। वह झुँझलाकर बोली—"बहस करने से कोई लाभ नही। मुझे जो कुछ कहना था, सो कह दिया।

आगे आपकी जो इच्छा हो सो कीजिए।" और वह मुँह फेरकर पलग पर लेट गई।

पेशवा ने भी बात आगे नही चलाई। वह सोने का प्रयत्न करने लगे।

९

पेशवा मस्तानी से विवाह करने पर दृढ थे। उन्हे किसी की चिन्ता नही थी। दूसरे दिन वह दोपहर मे स्वय मस्तानी के घर गए। मस्तानी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसका अग-अंग झूम उठा। पेशवा को वह अपने कमरे में ले आई और उन्हे पलंग पर बिठलाते हुए स्वय उनके पैरो के पास बैठ गई। पेशवा ने उसका हाथ पकडकर अपने बगल मे बिठला लिया और बोले—"मुझे बड़ा दुख है मस्तानी! कि मै जितनी जल्दी आने को कह गया था उतनी जल्दी आ न सका। मै इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

मस्तानी ने सिर उठाकर पेशवा को देखा और फिर झुका लिया। उसकी आँखो से आँसू गिरने लगे।

पेशवा ने मस्तानी की ठोढ़ी पकड़कर ऊपर उठाया और आश्चर्य से पूछा—"यह क्या?"

मस्तानी धीरे से बोली—"ये खुशी के आँसू है महाराज! मेरे जैसी भाग्यशाली इस संसार में दूसरी कौन है? इस वेश्या को भी ऐसा···।"

पेशवा ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया—"बस। आगे नही। भविष्य मे फिर ऐसी बात मुँह से न निकालना। अब मस्तानी वेश्या नही पेशवा की रानी है। क्या समझी?" पेशवा खड़े हो गए और

बोले—"तुमसे केवल यही कहने आया था। अब जा रहा हूँ। तैयार रहना। कल 'शनिवार वाडा' में आना है।" उन्होने उसके कपोलो को थपथपा दिया और तेजी से बाहर निकल गए।

मस्तानी बैठी की बैठी रह गई। माँ ने आकर पूछा। उसने बता दिया। बुढिया प्रसन्न मन बार बार ऊपर हाथ उठाकर कुछ बदबुदाती हुई अपने कमरे में चली गई।

मस्तानी बड़ी धूम-धाम और आवभगत के साथ 'शनिवार वाड़ा' में लाई गई। पेशवा स्वयं उसकी अगवानी के लिए महल के द्वार पर खड़े थे। उसके आने पर उन्होंने बडे सम्मान के साथ उतारा। मस्तानी फूली नही समा रही थी। 'शीशकक्ष' जो शीशे का बना हुआ था, उसमे पेशवा मस्तानी को ले आए। मस्तानी चारो ओर आँखें फाड़कर देखती हुई बोली—"इसे आपने बड़ा सुन्दर बनवाया है।"

पेशवा मुस्कराये—"लेकिन तुमसे कम सुन्दर है!"

मस्तानी ने सिर झुका लिया। पेशवा थोड़ी देर मे आने को कहकर बाहर चले गये।

नगर में बड़ी हलचल थी। इस प्रकार की घटना का किसी को स्वप्न में भी अनुमान नही था। एक मुसलमान वेश्या को पेशवा बाजीराव स्त्री बनाकर रखें यह महान अनर्थ ही तो था। लोग आपस में कह रहे थे—"पेशवा ने हिन्दू-धर्म पर कलंक का टीका लगा दिया। सत्यानाश कर दिया। मुसलमानों को देश से बाहर निकालने का बीड़ा उठाने वाले स्वयं एक मुसलमान से ब्याह करें, महान पाप है। उन्हे ईश्वर क्षमा नही कर सकता।" इस तरह की बातें नगर मे बड़ी सरगर्मी के साथ चल रही थी परन्तु थीं सब काना-

फूसी के रूप मे। खुलकर कहने का साहस किसी में नही था।

संध्या समय पेशवा के आदेश पर 'गणेश दीवानखाना' मे एक विशेष दरबार लगा। हाल नगर निवासियों से ठसाठस भर गया। इस विशेष दरबार के लगने का कारण सब को मालूम था। थोड़ी देर बाद पेशवा के आगमन की सूचना दी गई। सब शान्त हो गए। पेशवा आए। मसनद पर बैठते हुए उन्होने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और ऊँचे स्वर मे बोले—"आप सबको इस समय बुलाने का एक कारण है। मुझे बताया गया है कि मस्तानी के महल में आने के कारण आप लोगों के बीच धर्म-अधर्म के प्रश्न को लेकर मेरे विरुद्ध नानाप्रकार की बाते होने लगी है। इसलिये मैंने सोचा कि आपके विचारों को सुनूँ और फिर अपने तर्क से सिद्ध कर दूँ कि जो कुछ मैंने किया है, वह उचित है, अनुचित्त नही है। मै शक्ति द्वारा आपके मुँह को बन्द करना नही चाहता। इसे आप भली-भाँति समझ ले। और तभी मेरे आपके बीच पहले वाली प्रेम-भावना बनी रहेगी।"

पेशवा ने इधर-उधर देखकर आगे कहा—"मस्तानी का चरित्र पवित्र है। इसे आप सब जानते हैं। ईश्वर ने उसे रूप-गुण के साथ जो निर्भीकता और वीरता दे रखी है, वह भी अनोखी है। वह साहसपूर्ण कार्यों के करने मे कितनो बहादुर है, उसे कहने की आवश्यकता नही है। रहा प्रश्न अब हिन्दू और मुसलमान का, सो घरेलू है। इसे किसी भी रूप मे निपटाया जा सकता है। आत्मा मे पवित्रता होनी चाहिये फिर किसी बात की चिन्ता नही। शुद्धि द्वारा कोई भी मुसलमान हिन्दू बनाया जा सकता है। आप ।"

बीच मे चिल्लाता हुआ पूना का ढोंगी पण्डित ईश्वरदत्त

शास्त्री खडा हो गया—"यह असम्भव है पेशवा साहब ! शुद्धि द्वारा जाति-परिवर्तन नही हो सकता है। विशेषकर मुसलमानों की शुद्धि तो हो ही नही सकती है। उन्हे हमारे शास्त्रों के अनुसार स्पर्श करना भी पाप कहा गया है। यह सम्भव नही है।"

पेशवा मुस्कराकर बोले—"शास्त्रीजी, मै तो मस्तानी को ब्राह्मण बनाने वाला हूँ। मेरा अनुमान है कि इस प्रकार के कार्यों से देश और धर्म, दोनो की उन्नति होगी। समय को परखते हुए हमें इसी रास्ते को अपनाना चाहिए।"

शास्त्री—"यह महान अनर्थ है। कभी नही हो सकता है। आप अपनी शक्ति के बल पर अभी जो चाहे कर ले, पर हमारा धर्म मस्तानी को हिन्दू के रूप मे स्वीकार नही कर सकता है। क्या आप अपनी तलवार के बल पर हमें विधर्मी बनाना चाहते है ? बना सकते है किन्तु अन्त मे इसका फल बुरा होगा। यह आप को नही भूलना चाहिए कि जो चढता है वह गिरता भी है।"

पेशवा उसी प्रकार शान्त भाव से बोले—"शास्त्रीजी को व्यर्थ में क्रोध आ गया। मै शास्त्रीजी से पूछ सकता हूँ कि अब तक जो कुछ मैंने किया है क्या उन कार्यो से देश, धर्म और समाज को लाभ नही पहुँचा है ?"

शास्त्री—"बहुत अधिक। इसे मे कब इंकार कर रहा हूँ परन्तु ·· ··!"

पेशवा—"रुकिये शास्त्रीजी ! अगर मै मस्तानी के साथ रह-कर उसी प्रकार के कार्य करता हूँ तो क्या आप उसे पसन्द नहीं करेंगे या उनसे देश, धर्म और समाज को लाभ नही पहुँचेगा ?"

ईश्वरदत्त सोचने लगा। उसके पास कोई जवाब नही था।

पेशवा ने फिर कहा—"असत्य को सत्य का रूप देकर धर्म की ओट में हिन्दू धर्म के महान आदर्शों पर कीचड़ न उछालिये शास्त्री-जी ! आप जैसे पण्डितो ने ही छत्रपति शिवाजी के मार्ग मे रोड़े अटकाकर उनके प्राण ले लिये थे। ईश्वर की कृपा से अब फिर सभलने का अवसर आया है। सभलिए वरना बाद मे पछताना पड़ेगा।"

पेशवा की बातों का प्रभाव अच्छा पड़ा। सबने मन-ही-मन उनका समर्थन किया। परन्तु पाखडी ईश्वरदत्त कब मानने वाला था, वह उसी प्रकार चिल्लाता हुआ बोला—"पेशवा साहब, आप शिवाजी वाली स्थिति आने ही क्यो दे ? अगर आपको मस्तानी से बहुत लगन है तो उसे रखैल की तरह क्यों नही रख लेते, उसे ब्राह्मण बनाकर स्त्री की भाँति रखने की क्या आवश्यकता है ?"

अब पेशवा कुछ कड़े शब्दों में बोले—"मेरे चरित्र पर कालिख पोतकर मुझे नरक का भागी बनाना चाहते है ? मै कामी पुरुष नही हूँ शास्त्रीजी ! मै मस्तानी से प्रेम करता हूँ और प्रेम मे ईश्वर का अंश है। मै मस्तानी को पत्नी की तरह रखूँगा, रखैल की तरह नही। खैर, मै थोड़े में आप सब से यही कहूँगा कि मुझे इस प्रश्न पर उलझाने की कोशिश न की जाए।" पेशवा उठ खड़े हुए और महल में चले गए। दरबार भंग हो गया।

१०
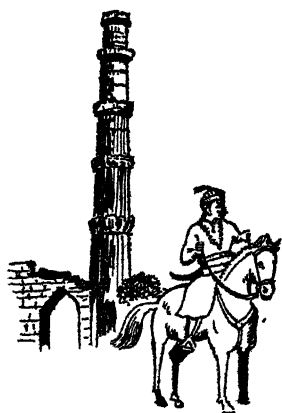
'शनिवार वाडा' महल के जो तीन मुख्य द्वार थे, उनमें एक का नाम पेशवा ने 'मस्तानी द्वार' रखा और महल के भीतर 'मस्तानी महल' के नाम से एक अलग महल बनवाने का आदेश दे दिया। उन्होंने जो सम्मान, प्यार और सुख काशीबाई को दे रखा था वही सम्मान, सुख और प्यार वह मस्तानी को देना चाहते थे। उन्होंने शुद्धि की तैयारी आरम्भ कर दी, परन्तु इसी बीच उनके पास सूचना आई कि सम्राट् मुहम्मदशाह ने अपने वजीर कमरुद्दीन खाँ को एक विशाल सेना के साथ मालवा रौंद डालने के लिए भेज दिया है। मस्तानी की सलाह से पेशवा ने शुद्धि वाला काम स्थगित कर दिया और तुरन्त सेना को तैयार होने का आदेश दिया। तीसरे दिन वह सेना लेकर चल पडे। एड़-से-एड़ मिलाए मस्तानी भी उनके साथ घोड़े पर उड़ती चली जा रही थी।

उधर दोआब में मुगल सरदार सादत खाँ की मुठभेड़ मराठा सरदार होलकर से हो गई। सादत खाँ की बड़ी सेना के सामने होलकर टिक न सका और मैदान छोड़कर भाग गया। अब क्या था? सादत खाँ तो तीसमार खाँ बन गया। उसने मुहम्मदशाह के पास अपनी बहादुरी और विजय का समाचार खूब बढा-चढाकर

लिखवा भेजा। साथ मे यह भी लिख दिया कि शीघ्र ही बाजीराव को बन्दी बनाकर जहाँपनाह के सामने हाजिर किया जाएगा। सम्राट् सादत खाँ से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसके लिए बहुत से उपहार

भेजे। मथुरा के समीप वज़ीर कमरुद्दीन भी सादत खाँ से आ मिला और फिर जीत की खुशी मे जश्न होने लगे।

सादत खाँ द्वारा सम्राट् मुहम्मदशाह को दी हुई झूठी सूचना और दोनों सेनापतियो का मथुरा के समीप आनन्द-उत्सव का समाचार पेशवा को विस्तार सहित बतलाया गया। पेशवा ने सब सुना और उस पर कुछ सोचा-विचारा। तदुपरान्त दूसरे दिन उन्होंने रास्ता बदल दिया। सारी सेना मुड़ गई। मस्तानी ने अपने घोड़ों को ऐड लगाते हुए आश्चर्य से पूछा—"इधर कहाँ ?"

पेशवा बोले—"दिल्ली चल रहे है। तुमने लालकिला नहीं देखा है न ?"

मस्तानी—"ना।"

पेशवा—"बस। लाल किला देखना और लाल किले के मालिक को भी देखना।"

मस्तानी सिर झटकाकर बोली—"पहेली न बुझाइए, असली बात बताईए।"

पेशवा ने सब कुछ बतला दिया। मस्तानी प्रसन्न थी।

उधर सम्राट् मुहम्मदशाह और उसके दरबारी सादत खाँ की बहादुरी के पुल बाँधकर आपस मे प्रसन्न हो रहे थे और इधर पेशवा तुगलकाबाद पहुँचकर धूम मचाने लगे। जो जैसे था वैसे ही दिल्ली को भागा। बाजीराव के नाम को सुनते ही मुगलों के शरीर में कँपकँपी दौड़ उठती थी। पेशवा तुगलकाबाद से कुतुबमीनार आए और वहाँ से आगे बढ़कर दिल्ली के समीप पड़ाव डालने का आदेश सैनिकों को दे दिया। पड़ाव पड गया।

दिल्ली मे खलबली फैल गई। मुगलो की जान सूखने लगी। सब किले मे भाग-भागकर दीवाने आम के सामने वाले मैदान मे इकट्ठे होने लगे। सम्राट् के आने के पहले मैदान खचाखच भर गया। सम्राट् आया और इस हल्ला से मुँह बनाता हुआ बिगड़-कर बोला—"क्या बदतमीजी फैला रखी है, यहाँ पर क्या सब जानवर हो गए हैं?" अभी सम्राट् को बाजीराव के आगमन की जानकारी नहीं थी।

सिहासन के समीप खड़ा मीरहसन कोका ने प्रार्थना की—"बाजीराव आ गया है गरीबपरवर! हो सकता है कल उसका हमला हो।"

मुहम्मदशाह ने कोका को घूरा और बिगड़कर कहा—"तुम्हारा

दिमाग तो नही फिर गया है मीरहसन ? तुम्हे सादत खाँ की जीत की खबर मालूम है या नही ? उसने बाजीराव को मोची बना दिया है मोची। क्या समझे ?"

कोका बोला—"गरीबपरवर को सादत खाँ ने गलत खबर दी थी। बाजीराव दिल्ली के पास आ गया है। उसी के डर से ये सारे लोग इकट्ठे हुए हैं। अब हुजूर ही इनकी जानमाल की रक्षा कर सकते है।"

मुहम्मदशाह ने आँखे फाडी—"क्या सचमुच बाजीराव आ गया है मीरहसन ?"

मीरहसन—"विश्वास करे गरीबपरवर। हालत बडी नाजुक है।"

मुहम्मदशाह के चेहरे पर हवाईयाँ उडने लगी परन्तु अभी उसे पूर्णरूप से विश्वास नही हो रहा था। वह तनिक सोचते हुए बोला—"हो सकता है मीरहसन, बाजीराव के धोखे मे कोई और आ गया हो। तुम फौज लेकर हमला करो। मुझे उम्मीद है तुम उसे मार भगाओगे। ठीक है ?"

मीरहसन—"जी गरीबपरवर !"

मुहम्मदशाह उठकर अन्दर चला गया।

दस हजार सैनिकों को लेकर मीरहसन कोका पेशवा को खदेड़ने के लिए लाल किले से निकला। जिस पेशवा के नाम को सुनकर बड़े-बड़े सेनापतियो का हृदय दहल उठता था उन्हे खदेड़ने के लिए मीरहसन कोका निकले थे। सूचना मिलने पर पेशवा ने एक टुकडी कोका को मार भगाने के लिए भेज दी। सेनाये भिड़ी। मुगल सैनिक अधिकतर मारे गए और जो बचे, वे प्राण बचाकर भागे। को घायल हुआ और के-के करता लाल किले को भाग चला पेशवा

अपनी रावटी मे बैठे सब सुन-सुनकर मस्तानी के सग हँसते रहे।

अब पेशवा किसी भी समय लालकिले पर अधिकार कर सकते थे परन्तु उन्होने अधिकार नही किया। उन्होने मुहम्मदशाह को चेतावनी भिजवा दी कि भविष्य में अगर फिर ऐसी गलती हुई तो वह दिल्ली पर अधिकार कर लेगे। मुहम्मदशाह ने बार-बार अल्लाह ताला का शुक्रिया अदा किया। उसकी जान बच गई। दूसरे दिन पेशवा अपनी सेना को लेकर पूना लौट पडे। मस्तानी ने पूछा—"यह कौन-सा तुक रहा? लाल किले पर अधिकार क्यों नही किया आपने? यह राजनीति हमारी समझ में नही आई!"

पेशवा मुस्कराए—"इसलिए नही आई कि मैं राजनीति के संग-संग इन्सानियत को भी महत्त्व देता हूँ। लोक के साथ परलोक बनाने की भी तो आवश्यकता है मस्तानी! अन्यथा ईश्वर के सामने क्या उत्तर दूँगा? फिर तुम्हारे विचार के अनुसार तो यों भी पहली गलती माफ होनी चाहिए। याद है तुम्हें अपनी बात?"

मस्तानी ने मुस्कराते हुए सिर झुका लिया और मन-ही-मन बडी देर तक अपने पति की इस महानता की सराहना करती रही। इतना उदार और मानवता का पुजारी दूसरा कहाँ मिल सकता है?

पेशवा को पूना पहुँचने में कई मास लग गए। वह सीधे न आकर मस्तानी को भिन्न-भिन्न प्रान्तों का भ्रमण कराते हुए पूना आए। आते ही वह तुरत शुद्धि का आयोजन करने लगे, पर उन्हे मालूम हुआ कि ब्राह्मण समुदाय अब भी विरोध करने के पक्ष में है और किसी भी कीमत पर शुद्धि नही होने देगा। पेशवा को दु:ख हुआ और साथ ही क्रोध भी आया किन्तु उन्होने शाँति का रास्ता पकड़ना ही उचित समझा। उन्होने गुर्गो को बुलाकर वास्तविकता की जानकारी की।

बात सच निकली। सब विरोध कर रहे थे। तब पेशवा ने भले-बुरे और लाभ-हानि का ज्ञान कराकर समझाने का प्रयत्न किया पर उन ढोंगियों पर कोई असर नही पड़ा। अब पेशवा अपने क्रोध को न रोक सके और बिगड़कर बोले—"तो फिर मुझे अपनी शक्ति का प्रयोग करना होगा ?"

एक ब्राह्मण ने उत्तर दिया—"आप कर सकते है। पर इसमें हम सब का क्या दोष है ? यदि हाँ भी कह दें तब भी तो कुछ नही बन सकता है श्रीमन्त ! जब आपका घर स्वय आपके विरोध में है।"

पेशवा – "क्या मतलब ?"

ब्राह्मण—"यही कि श्रीमन्त कि पत्नी काशीबाई स्वयं शुद्धि का विरोध कर रही है!"

पेशवा को जैसे काठ मार गया हो—"क्या कहा आपने ?"

ब्राह्मण—"मै सत्य कह रहा हूँ श्रीमन्त! आप इसका पता लगा सकते हैं।"

पेशवा की चिन्ता बढ गई। उन्होंने सब को जाने की अनुमति दे दी। पेशवा वहाँ से उठकर सीधे काशीबाई के पास पहुँचे और बैठते ही बोले—"मैं तुमसे कुछ पूछने आया हूँ।"

काशीबाई—"मुझे मालूम है। आपका पूछना बेकार होगा। उत्तर विरुद्ध मिलेगा !"

पेशवा चिल्ला पड़े—"काशी ! ऐसी नीचता तुम्हारे अन्दर है? एक पतिव्रता स्त्री का क्या यही धर्म है ? क्या यही तुमने वेदों और शास्त्रों में पढ़ा है ?"

काशीबाई भी कठोर शब्दों में बोली—"मैंने तो कुछ भी पढ़ा है लेकिन आपने क्या यही पढ़ा है कि अपने सुख के लिये दूसरे

के जीवन का सत्यानाश कर दें ? आप मस्तानी को पत्नी की तरह रखने के लिये क्यो व्याकुल है ? क्या इस व्याकुलता के पीछे कोई कारण नही है ? क्या मस्तानी द्वारा उत्पन्न पुत्र को ही आप अपना उत्तराधिकारी नही बनाना चाहते है ? क्या आप··· ।"

पेशवा ने डॉटा—"चुप रहो काशी ! तुम्हारा स्वार्थी हृदय बड़ा ओछा है ! तुम प्रत्येक कार्य को स्वार्थ की दृष्टि से देखती हो ! मुझे स्वप्न मे भी तुमसे ऐसी आशा नही थी । ठीक है ! जो तुम्हें उचित लगे सो करो पर याद रखो अन्त में तुम्ही को पछताना पड़ेगा । यह तुम्हारे लिये बड़ा दुखदायी सिद्ध होगा ।"

काशीबाई—"अब दु ख के सिवा सुख कहाँ मिलता है पेशवा साहब ! अब तो जो झेलना है उसे झेलूँगी ही लेकिन विधर्मी नही बनूगी । इसे आप भली-भाँति समझ ले ।"

पेशवा क्रोध में भनभनाते हुये उठकर चले गए ।

११

पेशवा जब काशीबाई के यहाँ से लौटकर मस्तानी के पास आए तो बड़े उदास थे। मस्तानी समझ गई कि काशीबाई ने उन्हे किस प्रकार का उत्तर दिया होगा। पेशवा के पैताने बैठती हुई वह सुस्त भाव से बोली—"अभी तक तो मैने आपसे कुछ कहा नही था लेकिन मै पूछती हूँ कि शुद्धि के लिए आपको इतनी परेशानी क्यो है ? क्या शुद्धि हो जाने पर कोई नई बात हो जाएगी ? मैने तो कभी आप से इसके लिये संकेत तक नही किया, फिर आप बेकार मे अपने को क्यों दुखी बना रहे है ?"

पेशवा—"मस्तानी ! मै प्रेम के आदर्श पर कालिख पोतना नही चाहता हूँ। जब मैंने तुमसे प्रेम किया है तो तुम्हे पत्नी के रूप में रखने का मेरा धर्म भी है।"

मस्तानी—"तो क्या मैं इस समय आप के संग पत्नी के रूप में नहीं रह रही हूँ ? क्या इस प्रकार का प्यार किसी अन्य स्त्री को प्राप्त हुआ होगा ?"

पेशवा—"सो तो ठीक है पर संसार की दृष्टि मे मैने अभी तुम्हे पत्नी के रूप में कहाँ ग्रहण किया है ? यह दुनियाँ मक्कारों की है। सत्य को असत्य बतलाकर ये मेरे प्रेम पर कीचड़ उछाल सकते हैं

मस्तानी खिल-खिलाकर हँस पड़ी—"मालूम पड़ता है रूढ़ियों

और ढोंगियो को चुनौती देने वाले पेशवा साहब अब घुटने टेकने लगे है। अपनी चिन्ता भूलकर अब संसार और मक्कारों की चिन्ता होने लगी है। क्या श्रीमन्त को मेरे प्रेम पर कुछ सन्देह तो नही होने लगा है।"

पेशवा मौन रहे। कोई उत्तर नही दिया। क्षण-दो क्षण बाद मस्तानी कुछ कहने वाली थी कि पेशवा बोल पडे—"मै तुम्हे कैसे समझाऊँ मस्तानी ? तुम मेरा मतलब नही समझ रही हो। मै घुटने नही टेक रहा हूँ। मुझे यह भी तो देखना है कि मेरे न रहने पर तुम्हारे सुख और सम्मान मे किसी प्रकार की कमी न आने पाये।"

मस्तानी पुन. खिल-खिलाकर जोरों से हँस पड़ी और बोली—"समझी! श्रीमन्त मुझे अकेला छोड़कर जाना चाहते है। ऐसा हो सकेगा महाराज! मस्तानी को आप से कोई अलग नही कर सकता है। मस्तानी भी श्रीमन्त के साथ-साथ मरेगी। इसे सत्य और अटल समझिये।"

पेशवा उसे निहारने लगे। मस्तानी भी उन्हे निहारती हुई फिर बोली—"मुझे नही मालूम था कि शुद्धि के पीछे श्रीमन्त का यह मतलब है। उठिये! मस्तानी के प्रेम मे बड़ी शक्ति है श्रीमन्त! मस्तानी मरेगी तो इन्ही चरणों मे और जीवित रहेगी तो इन्ही चरणों में। अलगाव असम्भव है।" वह उठी और दूसरे कमरे से तानपूरा ले आई और फिर सामने बैठकर उन्हें भजन सुनाने लगी। पेशवा भी सब कुछ भूलकर खो गए। उनके मन को शान्ति मिल गई थी।

मस्तानी की बातों का पेशवा पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। वह मस्तानी के कहने के अनुसार चलने लगे। उनकी चिन्ता समाप्त हो

गई। वह अपने कर्तव्यो का पालन करते हुए मस्तानी के प्रेम में खो गए। काशीबाई से उन्हें घृणा हो गई थी।

समय बीतता गया। पेशवा अपने उठाये हुए बीडे मे उसी प्रकार लगे थे। दिन-पर-दिन उनका यश फैलता गया। जीत-पर-जीत होती गई। मुगलो का भविष्य अन्धकार में बदलता गया। उन्हें विश्वास होने लगा कि पेशवा की शक्ति के आगे अब उनकी दाल नही गल सकती है। अब हिन्दुस्तान मुगलो का गुलाम नहीं रह सकता है। पूरे देश मे एक नई चेतना फैल उठी थी। अपना राज्य और अपने देश की कल्पना होने लगी थी परन्तु भविष्य मे ईश्वर क्या करने वाला है इसकी जानकारी किसे मालूम थी ?

उधर काशीबाई अपने हठ पर उतर आई थी। उसके मन में सुलगती हुई क्रोध की आग भड़क उठी थी। वह भले-बुरे का ध्यान किए बिना अपनी शक्ति का परिचय देने के लिये तैयार हो उठी थी। उसे अपनी बुद्धि और बल पर विश्वास था। वह समझती थी कि उसे पेशवा पर विजय मिल सकती है परन्तु उस पगली को यह नहीं मालूम था कि जिसे वह अपनी विजय समझती है वह भी तो उसकी पराजय है।

इधर पेशवा ने भी यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि जब समाज उसकी चिन्ता नही करता तो उन्हे उसकी चिन्ता करने की क्या आवश्यकता थी ? कर्तव्य करना उनका धर्म था सो वह कर रहे थे। समय बीतता गया। मस्तानी प्रसन्न थी और इसी प्रयत्न मे लगी रहती थी कि उसका प्रेम महान बनकर अमर हो जाए।

इसी बीच पेशवा के पास सूचना आई कि निजाम का लड़का नासिरजंग एक बड़ी सेना लेकर औरगाबाद से चल पडा है और

शीघ्र ही गोदावरी नदी पार करके मराठा प्रदेशों को रौदना आरम्भ कर देगा। जनता के हित के लिये तत्काल पेशवा को बढकर रोकना अनिवार्य हो गया। फौरन पेशवा ने सेना की तैयारी का आदेश दिया। सेना तैयार होने लगी।

पेशवा अपने सामानो के साथ-साथ मस्तानी के भी सामानो को बंधता देखकर आश्चर्य से बोले—"तुम्हें अपने शरीर का ध्यान है या नहीं ?"

मस्तानी—"बहुत है।"

पेशवा—'फिर यह तैयारी कैसी ?"

मस्तानी—"आप के साथ चलने की और कैसी ?"

पेशवा—"तुम घोड़े पर चलने योग्य हो ?"

मस्तानी—"योग्य हूँ या न हूँ लेकिन मै चलूँगी जरूर।"

पेशवा ने प्यार भरे शब्दों मे डाँटा—"नही। तुम को यही रहना होगा। अपनी तो जान दोगी ही साथ-साथ उस आने वाले शिशु की भी हत्या करोगी। ऐसी नासमझी किस काम की। मेरे लौटने में अधिक समय नही लगेगा।" मस्तानी गर्भवती थी।

मस्तानी मीठे शब्दो मे बोली—"अगर इसी बहाने जान चली जाय तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है महाराज! आपके चरणों मे पड़ी हुई मेरी आत्मा मुझ से छुटकारा ले ले तभी तो मेरा प्रेम अमर होगा। मेरी तो साधना सफल हो जाएगी श्रीमन्त!"

पेशवा—"तो तुम्हे अपने स्वार्थ के आगे और किसी के स्वार्थ का ध्यान नही है ?"

मस्तानी—"जी नही। मेरे इसी स्वार्थ मे मेरा परमार्थ है। ऐसा हो जाए तो क्या कहना है ?"

पेशवा ने उसके कपोलों को थपथपाया—"विश्वास और सच्ची लगन है तो ऐसा भी हो जाएगा लेकिन समय तो आने दो। अभी बहुत जल्दी है। अच्छा अपना सामान अलग कराओ। तुम्हारा चलना ठीक नही है।"

मस्तानी चुपचाप उठी और दासियो से सामान अलग करने को कहकर दूसरे कमरे मे चली गई और पलग पर लेटकर रोने लगी।

पेशवा बडी उलझन मे पड गए। ले जाएँ तो भी परेशानी, न ले जाएँ तो भी परेशानी। वह पीछे पीछे उसके कमरे मे गये। मस्तानी फफक-फफककर रो उठी। पेशवा ने धीरे से समझाया—"पगली कही की। कोई बडी लडाई है क्या ? एक-दो सप्ताह के भीतर लौट आऊँगा। नासिरजग कब का लड़ने वाला है ? जैसा बाप वैसा बेटा। और अगर मेरे शीघ्र लौटने का कोई समाचार न मिले तो दो-चार दिनों बाद तुम चली आना। बस अब तो खुश हो ? चलो हमारी विदाई की तैयारी करो। जितनी जल्दी जाना होगा उतनी ही जल्दी लौटूँगा।"

विवश होकर मस्तानी को उठना पडा। उसने जैसे-तैसे पेशवा को विदा किया परन्तु उनके जाते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। पता नहीं क्यों उसका मन इस बार बहुत घबडा रहा था। किसी अनजान भय के कारण हृदय काँप रहा था।

काशीबाई जिस अवसर की ताक मे थी वह अवसर मिल गया। उसने तुरन्त सैनिकों से 'मस्तानी महल' को घिरवा लिया और स्वय कुछ सैनिको को लेकर ऊपर पहुँची। मस्तानी पेशवा के अलगाव के कारण दुःखी मन अपने कमरे में लेटी हुई थी। कल से उसने न तो खाना खाया था और न जल ग्रहण किया था। सोचने का एक ऐसा

तार बंध गया था जो कही से टूटता ही नही था। तब तक उसे दरवाजे पर आहट मिली। उसने सिर घुमाकर देखा। सामने काशी-बाई को देखकर वह उठ खडी हुई और बोली, "आइये बैठिये।"

काशीबाई ने तीखे स्वर मे कहा—"शिष्टाचार का ढोग न रचो। मैं तुम्हारी नस-नस से परिचित हूँ। तुरन्त इस कमरे को खाली कर दो।"

मस्तानी अवाक् उसकी ओर देखती रह गई।

काशीबाई बिगड़कर बोली—"मेरी ओर देख क्या रही है? कमरे से बाहर निकल।"

अब मस्तानी के मुँह से आवाज़ निकली—"आप का मतलब मैं समझी नहीं।"

काशीबाई—"अभी मतलब समझाए देती हूँ, पहले कमरे से बाहर तो निकल।"

मस्तानी—"लेकिन······।"

काशीबाई गरजकर बोल उठी—"लेकिन वेकिन करेगी या निकलेगी? तेरे पेशवा साहब अब यहाँ रक्षा करने नही आएंगे। जल्दी निकल वरना······।"

मस्तानी सब कुछ समझ गई। अब उसने भी अकड़कर कहा—"मैं नहीं निकलूँगी। यह मेरा घर है। कोई मुझे निकाल नही सकता है।"

काशीबाई ने आवाज लगाई। दो सैनिक अंदर आये। उसने आदेश दिया—"इसे घसीटकर कमरे से बाहर निकालो।"

सैनिक खडे रहे। उन्हे साहस नहीं हो रहा था।

काशीबाई ने सैनिको को डॉटा—"मैं कहती हूँ, खड़े-खडे मुँह

क्या देख रहे हो ? इसे निकालते क्यों नही ?"

मस्तानी ने परिस्थिति समझ ली। इसके पहले कि सैनिक हाथ लगाएँ, वह बोली—"कहाँ चलना होगा ?"

काशीबाई हँस पडी—"बस, इतने मे सब जोश ठडे पड़ गए। बड़ी आई है अपना कहने वाली। कुलटा कही की।" वह आगे-आगे चलने लगी।

महल के एक सिरे पर एक छोटे-से कमरे के सामने काशीबाई आकर रुक गई और मस्तानी को अन्दर जाने का सकेत किया। मस्तानी अन्दर चली गई। काशीबाई गर्व के साथ बोली—"देखा मेरी शक्ति को। जब अपने पर उतर आती हूँ तो कोई काम मेरे लिये कठिन नही रहता।"

मस्तानी ने भी निडर होकर उत्तर दिया—"कठिन होता तो पेशवा साहब का प्रेम मुझे न मिलता। अपनी शक्ति को वहाँ क्यों नही परखती ? मुझे उनसे अलग कर तुम उनका प्यार नही पा सकती हो। वह हमारे है और हमारे ही रहेगे।"

काशीबाई खिसियाकर बोली—"जब हमारे नही होंगे तो तेरे भी नही होगे। इसे गाँठ बाँध लो।" वह मुड पडी। काशीबाई ने मस्तानी को बन्दी बना लिया।

१२

नासिरजग को घेरने और पराजित करने में पेशवा को बहुत दिन नहीं लगे। अन्त मे गिडगिडाकर नासिरजग ने संधि के लिये पेशवा से प्रार्थना की। पेशवा को दया आ गई। उन्होने उसकी जान छोड दी। पेशवा पूना को लौट गए। रास्ते में सैनिको ने विश्राम करने के विचार से रुकने की इच्छा प्रगट की। पेशवा रुक गए। रेभर गॉव के समीप पडाव पड़ गया।

पूना से समीप और सुन्दर स्थान होने के कारण पेशवा ने मस्तानी को भी वहीं बुला लेना उचित समझा। अत अपने खास नौकर शिदे को उन्होने पूना भेज दिया। दो दिन बीत गए। शिदे नही लौटा। तीसरे दिन सध्या समय जब पेशवा शिकार से लौटे तो आते ही द्वारपाल से पूछा—"शिदे नही आया अभी तक ?"

द्वारपाल—"जी नही श्रीमन्त।"

पेशवा खड़े हो गए और क्षण-भर सोचते रहने के उपरान्त बोले—"जिस समय भी आए उसी समय मुझे सूचित किया जाए।"

द्वारपाल—"जी श्रीमन्त।"

पेशवा अन्दर चले गये।

अभी रात बहुत नहीं बीती होगी कि शिदे पूना से लौटा। वह सीधा पेशवा की रावटी में गया। पेशवा जाग रहे थे। आहट मिलते

ही करवट बदली। सामने शिंदे को देखकर उठ बैठे—"रानीजी नही आई ?" उन्होने पूछा।

शिंदे ने सिर लटकाये उत्तर दिया—"जी नहीं।"

पेशवा—"क्यो ? तबीयत तो ठीक है।"

शिंदे चुप रहा।

पेशवा ने तनिक ध्यान से उसे देखा और चिन्तित स्वर में बोले—"कोई विशेष बात है ? बोलते क्यों नही ?"

शिंदे—"रानी जी से भेंट न हो सकी।"

पेशवा—"भेंट न हो सकी। क्यों ?"

शिंदे—"बड़ी रानीजी ने शायद उन्हे बन्दी बना लिया है।"

पेशवा—"बन्दी बना लिया है ! कहाँ ?"

शिंदे—"उसी महल में।"

पेशवा—"क्यों ?"

शिंदे—"कारण नही मालूम हो सका। पूछने पर बड़ी रानीजी ने डाटते हुए लौट जाने का आदेश दिया।"

कुछ समय तक पेशवा आँखें फाड़कर शिंदे को देखते रह गए और फिर धीरे-धीरे तकियों के सहारे लेट गए। उन्होने करवट बदली—"जाओ।" उनकी आज्ञा थी। शिंदे बाहर निकल आया।

रात बीत गई। पेशवा करवटे बदलते रहे। घोर चिन्ता के कारण सो न सके। सवेरा हुआ। वह उठ बैठे और नित्य कर्म के उपरान्त फौरन शिकार को निकल पडे। दिन ढले तक वह यो ही बिना कोई शिकार किए जगल मे घोड़ा दौडाते रहे। क्यो दौड़ाते रहे उनके सैनिक भी नही समझ पाए। फिर अचानक लौट पड़े। किसी को कुछ पूछने का साहस न हो सका। उनका चेहरा उदास था।

रावटी में आते ही वह लेट गए और कुछ समय बाद यह सुनकर महान आश्चर्य हुआ कि उन्हे ज्वर आ गया है। महान आश्चर्य की बात इसलिये थी कि अभी तक पेशवा को बीमार होते तो दूर, उन्हें थकान का अनुभव करते हुए भी किसी ने नहीं देखा था। रावटी के बाहर सेना नायकों और सरदारों की भीड़ इकट्ठी होने लगी परन्तु अन्दर जाने की किसी को अनुमति नहीं थी। राजवैद्य अन्दर थे और उन्ही के बाहर आने की प्रतीक्षा हो रही थी। थोड़ी देर बाद राजवैद्य बाहर निकले। लोगो ने घेर लिया। राजवैद्य का चेहरा

उतरा हुआ था। उन्होंने बताया कि श्रीमन्त ने दवा लेने से इन्कार कर दिया है।

एक सरदार ने पूछा—"क्यों ? तबीयत तो ठीक है ?"

राजवैद्य—"तबीयत तो ठीक है पर ज्वर बढ रहा है। दवा त

लेने से रूप भयकर हो सकता है। ऐसे लक्षण मालूम पड़ रहे हैं।"

सरदार—"लेकिन श्रीमन्त ने दवा लेने से इन्कार क्यो कर दिया ?"

राजवैद्य—"क्या बताऊँ ? कोई कारण समझ में नही आ रहा है। वह अधिक बोलना भी नही चाहते हैं।" राजवैद्य धीरे-धीरे भीड़ से बाहर हो गये।

आधी रात का समय होगा। पेशवा की उलझन बढ गई थी। वह तख्त पर करवटे बदल रहे थे और जब-तब बर्राने भी लगते थे। उनकी बर्राहट में वेदना थी। राजवैद्य पुन आए। उन्होने औषधि देने का प्रयत्न किया परन्तु पेशवा ने हाथ से रोक दिया। राजवैद्य ने जबरदस्ती करने की कोशिश की। पेशवा ने मुँह फेर लिया। राजवैद्य विवश हो गए। राजवैद्य ने शिंदे को बाहर चलने का संकेत किया। बाहर आकर उन्होंने शिंदे से कहा—"काशीबाई के पास सूचना भेज दो। उनका आना अब बहुत आवश्यक है।"

शिंदे—"अच्छी बात है। भेजे दे रहा हूँ।"

ढलती रात में चार घुड़सवार पूना के पथ पर शीघ्रता से बढ़ते चले जा रहे थे।

१३

मस्तानी की हालत बड़ी खराब थी। वह पेशवा के वियोग में तड़प रही थी। उसे अपने बन्दी बनने का उतना दुःख नहीं था जितना पेशवा के अभी तक समाचार न मिलने का था। वह दिन-रात यही सोचा करती कि किस कारण से पेशवा का न तो कोई समाचार प्राप्त हो सका और न वह अब तक पूना लौट सके। परन्तु उसे कोई कारण नहीं समझ मे आ रहा था और इसलिए उसकी चिन्ता और भी बढ गई थी। उसने खाना-पीना बन्द कर दिया था और दिन रात आँसू बहाती रहती थी। उसे अब संसार की किसी वस्तु की चाह नही थी, अगर चाह थी तो केवल पेशवा के दर्शन की। इस प्रकार उसके कई दिन बीत गए। पेशवा के विषय में कुछ भी जानकारी न मिल सकी। अब उसने जीवन का अंत कर लेना ही उत्तम समझा। उसे अब जीवन नही मृत्यु प्यारी थी। आज सवेरे उसकी दायीं आँख फड़कने लगी थी। उसकी व्यथा और बढ़ गई। उसे विश्वास हो गया कि कोई बहुत दुखदायी घटना घटने वाली है। वह बार-बार आँख मलती हुई शोक में बिधने लगी। दोपहर के लगभग दासी भोजन लेकर आई। यद्यपि वह भोजन नहीं करती थी फिर भी काशीबाई का आदेश था कि भोजन नित्य भेजा जाए। भोजन एक ओर रखकर दासी मस्तानी के समीप बैठ गई और धीरे से

बोली—"शायद आपको बताया न जाय, श्रीमन्त की तबीयत बहुत खराब है।"

मस्तानी—"क्या श्रीमन्त आ गए ?"

दासी—"आए नहीं है। वह रेभर मे है।"

मस्तानी—"रेभर मे है! मै कुछ समझी नही।"

दासी—"लडाई से लौटने पर श्रीमन्त रेभर गाँव में विश्राम हेतु रुके थे और वही उनको ज्वर आ गया।"

मस्तानी—"तुम्हे किसने बताया ?"

दासी—"नगर में बड़ी हल-चल है। श्रीमन्त की तबीयत शायद अधिक खराब है।"

मस्तानी की आँखों से आँसू बहने लगे। दासी ने धीरज बंधाया और भगवान पर भरोसा रखने को कहती हुई जब चलने को हुई तो मस्तानी उसके पैरों पर गिर पड़ी और लगी बिलख-बिलखकर रोने।

दासी ने घबड़ाकर पैर खीच लिए और पुन बैठती हुई उसकी आँखों को पोंछ-पोंछकर स्वयं भी रोने लगी।

मस्तानी ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"तुमसे एक विनती है। मैं श्रीमन्त को एक बार देखना चाहती हूँ। मुझे किसी प्रकार यहाँ से बाहर निकाल दो।"

दासी बड़ी उलझन मे पड़ गई। काम बड़ा कठिन था। फिर भी उसने कुछ सोचते हुए पूछा—"पर आप रेभर तक इस दशा में पहुँच सकेंगी ?"

मस्तानी—"पहुँच जाऊँगी बाई! तुम किसी प्रकार मुझे महल से बाहर निकाल दो। तुम्हारा उपकार जीवन-भर नही भूलूँगी। बस

श्रीमन्त के दर्शनों के लिये यह प्राण रुके है।" वह फिर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

दासी ने उठाया और विश्वास दिलाया कि संध्या तक कुछ-न-कुछ वह अवश्य करेगी। वह चली गई।

दीया-बाती के समय दासी आई और झटपट अपने वस्त्र उतारते हुए मस्तानी से बोली—"आप मेरे कपड़े पहनकर जल्दी से महल के बाहर निकल जाइए। अवसर उपयुक्त है।"

मस्तानी ने पूछा—"और तुम ?"

दासी—"मैं आपके कपड़े पहनकर यही बैठ रहूँगी। जल्दी कीजिए। समय थोड़ा है।"

मस्तानी ने झटपट कपड़े बदले। एक नवीन आशा से उसका मन प्रसन्न हो उठा था। उसने दासी को गले लगाया और सबकी आँखों से अपने को बचाती हुई महल के बाहर हो गई। नगर से निकलकर एक पेड़ के नीचे कुछ देर तक बैठकर उसने दम लिया और फिर रेभर की ओर चल पड़ी। जिसने हफ्तो से अन्न न ग्रहण किया हो, जो स्वयं गर्भवती हो, जिसे नगे पॉव चलने का अभ्यास न हो वही मस्तानी इस समय कोसों दूर रेभर गाँव के मार्ग पर भागती चली जा रही थी। सच्चे प्रेम में यही शक्ति है। मस्तानी को न तो अपने जीवन का मोह था और न उस आने वाले शिशु के लिये ममता थी। उसे तो पेशवा साहब प्यारे थे, उनका प्रेम प्यारा था और उस प्रेम पर कही धब्बा न लगने पाए वह आन प्यारी थी। मस्तानी लम्बे-लम्बे पैर रखती चली जा रही थी। नानाप्रकार की बाते सोचती चली जा रही थी। वह सोच रही थी कि रेभर गाँव पहुँचकर वह पेशवा को कसम दिलाएगी कि फिर कभी उससे वह अलग न हों।

उधर काशीबाई को किसी दूसरी दासी से मस्तानी के भाग निकलने की सूचना मिली। काशीबाई क्रोध में भनभनाती हुई वहाँ पहुँची जहाँ मस्तानी को बन्द किया था। उसने आते ही उस दासी को चार-छह थप्पड मारे और मस्तानी के विषय मे पूछने लगी। दासी ने बताने से इन्कार कर दिया। काशीबाई आग-बबूला हो गई। उसने कोडा मँगवाया और एक सैनिक को मारने का आदेश दिया। कोड़े चलने लगे। बिचारी दासी कहाँ तक सहन करती, उसने अन्त मे बता दिया। काशीबाई ने तुरन्त सैनिको को चारों ओर दौड़ाया और आदेश दिया कि मस्तानी को किसी भी दशा में पकड़कर लाया जाए। सैनिकों की टुकड़ियाँ चारों ओर निकल पड़ी।

मस्तानी अभी बहुत दूर नही जा सकी थी कि उसे घोड़ों के टाप सुनाई पड़े। उसे कुछ सन्देह हुआ। वह सडक के किनारे एक पेड़ की ओट में जा छिपी। घुड़सवार निकलने लगे। परन्तु न मालूम कैसे अन्तिम घुड़सवार की निगाह उस पर पड़ गई। वह घोडा मोड़ता हुआ मस्तानी के समीप जा खड़ा हुआ और फिर सबको आवाज़ दी। सब लौट पडे। मस्तानी काँपने लगी, फिर भी उसने दृढ़ स्वर में पूछा—"आप सब क्या चाहते हैं ?"

दुर्भाग्य की बात, नायक ने मस्तानी को पहचान लिया। वह घोड़े से नीचे उतरा और बड़ी शिष्टता के साथ बोला—"बड़ी रानीजी की आज्ञा से हम लोग आपकी ही खोज में निकले है। आपको वापस चलना होगा। सब-कुछ जानते हुए भी हम लोग विवश हैं रानी जी !"

मस्तानी सब कुछ समझ गई। लौटने के अतिरिक्त और कोई चारा नही था। इसी में बुद्धिमानी थी। वह चुपचाप लौट पड़ी। सैनिक मस्तानी की दशा पर मन-ही-मन दुःख प्रगट करते हुए सिर

लटकाए चलने लगे।

काशीबाई प्रतीक्षा में बैठी ऊँघ रही थी जब उसे मस्तानी के पकड़े जाने की सूचना दी गई। वह हड़बडाकर उठ खडी हुई और दाँतो को पीसकर बोली—"तो पकड मे कुलटा आ गई ! ले आओ। कहाँ है ?"

मस्तानी काशीबाई के सामने आई और उसके पूर्व कि काशी-बाई कुछ कहे मस्तानी उसके पैरो पर गिर पडी और रोती हुई

कहने लगी—"मुझे एक बार पेशवा साहब के दर्शन करा दीजिए रानीजी ! बस केवल एक बार। फिर जो दड देना चाहे दे ले। मुझे सब स्वीकार है। मेरे प्राण तक आप ले ले लेकिन एक बार उनके दर्शन करा दे।" वह काशीबाई के पैरो को पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी।

काशीबाई ने पैरों को झिटक दिया और हँसती हुई बोली— "देखा मेरी शक्ति को ! तुझे तो घुला-घुलाकर मारूँगी घुला-घुलाकर" और फिर उसने एक सैनिक को उसे ले जाने का आदेश दिया।

सैनिक मस्तानी का हाथ खींचता हुआ ले गया।

१४

जिस दिन काशीबाई रेभर गाँव पहुँची उस दिन इतवार था। दिन ढल चला था जब काशीबाई ने अपने पति के डेरे मे प्रवेश किया। पेशवा शान्त लेटे हुए थे। अन्दर राजवैद्य, पिलाजी यादव और शिदे थे। सबके चेहरे पर उदासी फैली हुई थी। काशीबाई पेशवा के सिर पर हाथ रखती हुई सिरहाने बैठ गई। उसकी भी आँखे डबडबा आई थी। कोमल हाथों के स्पर्श होते ही पेशवा के मुँह से निकला—"मस्तानी !" और उनकी आँख खुल गई। परन्तु काशीबाई को देखकर उन्होने फिर आखे बन्द कर ली और बोले—"अच्छा, तुम हो ? कहो, कैसे आना हुआ ? क्या घाव पर नमक छिड़कने आई हो ? ठीक है। वह भी कर लो। यह अरमान तुम्हारा क्यों रह जाए ?"

काशीबाई रोती हुई उनके पैरों से लिपट गई—"ऐसा न कहिए महाराज !"

पेशवा उसी प्रकार धीरे से बोले—"ऐसा न कहूँ तो कैसा कहूँ ? तुमने जो चाहा था वही हो रहा है। तुमने मस्तानी को बन्दी बना लिया है न ?"

काशीबाई चुप रही।

पेशवा—"बोलती क्यो नही हो ? बन्दी ही बनाया है या मरवा

भी डाला है ?"

काशीबाई—"नही महाराज । केवल बन्दी बनाया है ?"

पेशवा—"क्यो ? उसने कौन-सा अपराध किया था ?"

काशीबाई चुप रही । वह क्या उत्तर देती ?

पेशवा तनिक कराहते हुए बोले—"काशी ! तुमने मेरी जान ली सो तो ली ही लेकिन देश का बड़ा अहित किया । तुम्ही ने ब्राह्मणो को भड़काकर मेरे विरुद्ध उभाडा और जब उससे भी तुम्हारा काम न बना तो अन्त में मुझ से न लड़कर मस्तानी को कैद कर लिया । हो सकता है उसे तुम मरवा भी डालो । ठीक है मरवा डालना । इसी में उसकी भलाई भी है ।" वह मिनट-दो मिनट तक चुप रहे फिर बोले—"पिलाजी !"

पिलाजी "श्रीमन्त" कहते हुए समीप आ गए ।

पेशवा—"आने वाली पीढियाँ इस औरत को गालियाँ तो देगी ही पर तुम मेरे उठाये हुए बीड़े को जहाँ तक हो सके पूरा करने का प्रयत्न करना । जिस दिन अत्याचारियो से देश मुक्त हो जाएगा उस दिन मेरी आत्मा को बहुत संतोष मिलेगा ।" उन्होंने करवट बदली और चुप हो गए ।

धीरे-धीरे रात समाप्त होने लगी । सवेरा होने को आया । पेशवा की श्वासें अभी चल रही थी । उन्होंने करवट बदली और अचानक उनके मुँह से निकला—"शिदे, मस्तानी को काशी ने बन्दी बना लिया है, अच्छी बात है ।" उन्होने फिर करवट ली । प्राण-पखेरू उड़ गये । पेशवा की आत्मा शरीर से निकल गई । हाहाकार मच गया ।

× × ×

दूसरे दिन पेशवा की मृत्यु का समाचार पूना पहुँचा। महल में रोना-धोना पड़ गया। अचानक रोने की आवाज से मस्तानी चौंकी। वह अपने बन्द कमरे में व्याकुल हो उठी। तब तक सामने से एक दासी जाती हुई दिखलाई पड़ी। उसने दासी को बुलाकर रोने का कारण पूछा। दासी ने आँखें पोंछते हुए बतलाया—"श्रीमन्त···?"

मस्तानी का हृदय ऐंठने लगा—"क्या श्रीमन्त ?"

दासी—"श्रीमन्त नही रहे रानी जी !"

मस्तानी—"क्या कहा···?"

दासी—"श्रीमन्त का स्वर्गवास हो गया रानी जी !" और उसने आगे के लिए पैर उठाया ही था कि मस्तानी खड़े-खड़े धड़ाम से गिर पड़ी। दासी घबड़ा गई। दौड़कर उसने औरों को बुलाया। किवाड़ खोले गए। परन्तु वहाँ कुछ नही था। मस्तानी की भी आत्मा पेशवा की आत्मा से जा मिली थी। जब पेशवा मस्तानी के वियोग मे मर कर अपने प्रेम को अमर कर सकते थे तो क्या मस्तानी मरकर अपने प्रेम की सच्चाई का सबूत नही दे सकती थी ?